* ओ३म् *
कालेज होस्टल.
लेखक—
कुं० चांदकरण शारदा, एडवोकेट, अजमेर

समर्पण

यह पुस्तक मैं मेरे

६३ वें जन्म दिवस के सुअवसर पर

सती साध्वी

मेरे जीवन के प्रत्येक कार्य में

सहयोग देने वाली आदर्श

आर्यदेवी मेरी धर्मपत्नी

स्वर्गवासिनी श्रीमती

सुखदादेवीजी की

पुण्य स्मृति में

स म र्पि त

करता

हूँ।

—चांदकरण शारदा

विद्यार्थी-मनोरंजन ग्रन्थमाला, संख्या १.

कालेज होस्टल

अर्थात्—

विद्यार्थी जीवन की लीला का अनूठा उपन्यास

लेखक—

कुंवर चांदकरण शारदा एडवोकेट

प्रकाशक—

अधिष्ठाता, राजस्थान वनिता आश्रम, अजमेर.

मुद्रक—

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर.

तृतीयावृत्ति २००० } रामनवमी संवत् २००७ वि० सन् १९५०. { मूल्य ॥)

श्रीमती दमयन्ती देवी टांगा

निवासिनी के कर कमलों में

सादर सप्रेम भेंट

तुम्हारे प्रिय पिताजी

— चांद करण शारदा

पौष शुक्ला प्रतिपदा

सं. वि. २०११

ता. ८-१-५५ ई.

ओ३म्

प्रकाशक के दो शब्द

प्रिय पाठकवृन्द !

देशभक्त कुंवर चांदकरणशारदाजी के ६३ वें जन्म दिवस पर हम चाहते थे कि श्री शारदाजी को श्रद्धांजलि के रूप में अभिनन्दन पुस्तक समर्पित करते और जनता जनार्दन को उनके अनेक संस्मरणों, उनकी रचित पुस्तकों, व्याख्यानों व भाषणों को भेंट करते ताकि जनता उनसे लाभ उठा सकती. परन्तु अनेक असुविधाओं. विघ्न बाधाओं व आर्थिक कष्टों के कारण हम सफल न हो सके। परन्तु हम आशा करते हैं और विश्वास दिलाते हैं कि अगले वर्ष यह कार्य श्री शारदाजी के अनेक भक्तों व प्रिय भाई बहनों और मित्रों के सहयोग और सहायता से अवश्य सफल हो जायगा। काशी नागरी प्रचारिणी सभा के संस्थापक और भूतपूर्व प्रधान मन्त्री श्रद्धेय वयो-वृद्ध श्री पं० रामनारायणजी मिश्र ने इस अभिनन्दन ग्रंथ के संपादन करने का वचन दिया है। इस वर्ष तो हम श्री शारदाजी रचित उनका उपन्यास "कालेज होस्टल" कर कमलों में भेंट करते हैं। यह उपन्यास श्री शारदाजी ने आज से ३८ वर्ष पूर्व सन् १९१२ में लिखा था, जिसको पढ़ने से अंग्रेजी शिक्षा पाने वाले कालेजों के भारतीय विद्यार्थियों की जीवन लीला का चित्र खिंच जाता है। इस उपन्यास के पाठकों के हृदय में इसको पढ़ते ही नवजीवन की लहर दौड़ जाती है और वे कर्मवीर, उत्साही बन जाते हैं। इस उपन्यास में हास्यरस इतना भरा पड़ा है कि हंसते २ पाठकों का पेट फूल जाता है। निराशावाद का

इस उपन्यास में बड़े ही सुन्दर ढंग से खण्डन किया गया है, और पाठक आशावादी, कर्मवीर, देशभक्त बन जाते हैं। आज से ३८ वर्ष पूर्व ऐसा मौलिक उपन्यास हिन्दी भाषा में लिखना बड़ी ही गौरवमय साहित्यिक सेवा समझी जाती थी। जिस समय यह प्रथम वार प्रकाशित हुआ उस समय के सभी हिन्दी पत्रकारों ने इस उपन्यास की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा की। इसके पश्चात् इसके कई संस्करण निकल चुके हैं। गत दस वर्षों से जनता की मांग इसके पुनः छपाने के लिए बढ़ती जारही थी। इस वास्ते जनता के लाभार्थ श्री शारदाजी के जन्मदिवस के अवसर पर हम इसे पुनः छाप रहे हैं। श्री शारदाजी सच्चे कांग्रेसी, सच्चे हिंदुसभावादी, सच्चे आर्यसमाजी, सच्चे समाजवादी, तथा सच्चे आर्यवीर राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के पोषक हैं। जो अच्छा देश हित का कार्य होता है उसमें आप सदा तन मन धन से सहायता प्रदान करते हैं। हम परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आपको सदा स्वस्थ रखे और आपके जीवन में सदा सुख समृद्धि आशा उल्लास एवं विजय भावना बढ़ती रहे ताकि आप महर्षि दयानन्दजी द्वारा बताये हुये आर्यों के चक्रवर्ती साम्राज्य की स्थापना कर सकें और आर्य संस्कृति के उद्धार के लिये सदा तत्पर रहें।

निवेदक

सत्यदेव शास्त्री अशोक
मन्त्री, शारदा सत्कार समिति,
शारदा-भवन, अजमेर।

मिती प्रथम अषाढ बदी २
सं० २००७ विक्रमी
ता० २ जून सन् १९५०.

ईश-प्रार्थना

ओ३म् आ ब्रह्मन् ब्राह्मणो ब्रह्मवर्चसी जायतामा राष्ट्रे राजन्यः शूर इषव्योऽतिव्याधी महारथो जायतां दोग्ध्री धेनुर्वोढानड्वानाशुः सप्तिः पुरन्धिर्योषा जिष्णू रथेष्ठाः सभेयो युवाऽस्य यजमानस्य वीरो जायताम्। निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु फलवत्यो न ओषधयः पच्यन्तां योगक्षेमो नः कल्पताम् ॥

यजु॰ अध्याय २२। मं॰ २२ ॥

प्रस्तावना

प्रिय पाठको !

यह छोटा सा उपन्यास मैंने विद्यार्थियों के मनोरंजनार्थ लिखा है। इसमें किसी मुख्य कालेज, स्कूल, व्यक्ति या जातिविशेष का वर्णन नहीं है। इसमें लिखी हुई बहुतसी बातें केवल खयाली पुलाव हैं। इस उपन्यास के कुछ भाग मैंने "नवजीवन" में "एक विद्यार्थी" के नाम से छपवाये थे। कई मित्रों के अनुरोध से मैं उन सब लेखों को संकलित कर नवयुवकों के सम्मुख पुस्तकाकार में रखता हूँ। इस उपन्यास में मैंने सज्जनसिंह, सत्यवतीदेवी, सुशीलचन्द्र, धोकलसिंह और उनके मित्रों का चित्र खींचा है। सज्जनसिंह का कालेज में पढ़ना, वहां स्नातक होना,

स्नातक के पश्चात् उनका कालेज छोड़ना, उनका निराशसिंह के फेर में फंसना. सत्यवती देवी से उनका बचाया जाना, तत्पश्चात् दयानन्द नामक स्टीमर में बैठकर विद्याध्ययन के लिये उनका विदेश में जाना, विदेश में कई यूनिवर्सिटी की उपाधियां प्राप्त करना, विदेश से लौटकर व्यापार कर खूब धन कमाना, तत्पश्चात् सत्यवतीदेवी से विवाह करना इत्यादि बातें ११ परिच्छेदों में बताई गई हैं। यदि विद्यार्थियों ने इस छोटे से उपन्यास को पसंद किया तो मैं अपना परिश्रम सफल समझूंगा। मैं पूज्यपाद भिषगाचार्य डाक्टर केशवदेवजी शास्त्री एम. डी. का हृदय से धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने मेरे लेखों को "नवजीवन" में स्थान देकर मुझे आर्य्य भाषा में लेख लिखने को उत्साहित किया। मैं लेखक नहीं हूँ। इस पुस्तक में कई भाषा की त्रुटियां रह गई हैं, यह मेरा पहिला प्रयत्न था। अतः पाठक मेरे प्रथम प्रयत्न को दृष्टि में रखते हुये क्षमा करें।

विनीत—

चांदकरण शारदा.

कालेज होस्टल

•••■•••

प्रथम परिच्छेद

जून का महीना है। चारों ओर ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप है। सुशीलचन्द्र मार्च में मेट्रिक्यूलेशन की परीक्षा दे चुका था, इस लिये गर्मी की छुट्टियाँ खूब आनन्द से कट रही थीं। केवल चिन्ता परीक्षा के परिणाम की थी। परिणाम १५ जून को आने वाला था इसलिये रात को कभी २ नींद भी नहीं आती थी। आखिर सोमवार आया और सुशील दौड़ा २ डाकखाने गजट देखने के लिये प्रातःकाल ही गया, परन्तु निराश होकर लौटना पड़ा, क्योंकि परिणाम उस दिन के गजट में छपा ही नहीं था। वह इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की सुस्ती पर नाना प्रकार की समालोचना करने लगा। खैर! जैसे तैसे वह सप्ताह कटा और दूसरे सोमवार को वह डाकखाने भी नहीं गया, उस दिन गजट आ गया था। एक लड़का दौड़ा २ उसके मकान पर आया और उसे पुकारने लगा। उसके आते ही कहने लगा कि मिठाई खिलाओ, तुम सेकिन्ड डिवीजन में पास होगये हो, वह भी प्रसन्नता से पूरित होगया। विलायत में परीक्षाओं की और डिगरियों की कोई परवाह नहीं की जाती, क्योंकि वहाँ पर विद्यार्थियों का नौकरी करने का मुख्य उद्देश्य नहीं। वहाँ पर तो उद्देश्य केवल देशहितैषी, देशभक्त मनुष्य बनना है, परन्तु भारतवर्ष में विचित्र दशा

कालेज होस्टल

++卐++

प्रथम परिच्छेद

जून का महीना है। चारों ओर ग्रीष्म ऋतु का प्रकोप है। सुशीलचन्द्र मार्च में मेट्रिक्यूलेशन की परीक्षा दे चुका था, इस लिये गर्मी की छुट्टियाँ खूब आनन्द से कट रही थीं। केवल चिन्ता परीक्षा के परिणाम की थी। परिणाम १५ जून को आने वाला था इसलिये रात को कभी २ नींद भी नहीं आती थी। आखिर सोमवार आया और सुशील दौड़ा २ डाकखाने गजट देखने के लिये प्रातः काल ही गया, परन्तु निराश होकर लौटना पड़ा, क्योंकि परिणाम उस दिन के गजट में छपा ही नहीं था। वह इलाहाबाद यूनिवर्सिटी की सुस्ती पर नाना प्रकार की समालोचना करने लगा। खैर! जैसे तैसे वह सप्ताह कटा और दूसरे सोमवार को वह डाकखाने भी नहीं गया, उस दिन गजट आ गया था। एक लड़का दौड़ा २ उसके मकान पर आया और उसे पुकारने लगा। उसके आते ही कहने लगा कि मिठाई खिलाओ, तुम सैकिन्ड डिवीजन में पास होगये हो, वह भी प्रसन्नता से पूरित होगया। विलायत में परीक्षाओं की और डिगरियों की कोई परवाह नहीं की जाती, क्योंकि वहाँ पर विद्यार्थियों का नौकरी करने का मुख्य उद्देश्य नहीं। वहाँ पर तो उद्देश्य केवल देशहितैषी, देशभक्त मनुष्य बनना है, परन्तु भारतवर्ष में विचित्र दशा

है। यहाँ परीक्षा में पास होना या न होना मृत्यु जीवन का प्रश्न है, किन्हीं की भावी आशायें केवल परीक्षा के पास करने पर निर्भर होती हैं। केवल पास करने पर किन्हीं की छात्रवृत्ति विवाह शादी इत्यादि होते हैं। पेट का सवाल भी इस दरिद्रदेश में प्रत्येक विद्यार्थी के सम्मुख रहता है और वह फेल होने से मृत्यु से भी अधिक डरता है, इस लिये आप ही समझ सकते हैं कि सुशील को और उसके माता पिता को कितनी प्रसन्नता हुई होगी, परन्तु दो चार दिन पश्चात् ही उसे चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। उसके पिताजी ने सम्मति दी कि कालेज में भरती होओ। बस, उसने कोट पेन्ट सिलवाये और १४ जुलाई को वह कालेज में भरती होने के लिये चला। स्टेशन पर उसको, उसके माता पिता मित्र इत्यादि पहुंचाने आये और वह रेल में आराम से बैठ गया। रात का समय था और गाड़ी खाली थी इसलिये वह मजे में सो गया। बस, उसे यही चिंता थी कि कालेज में अंग्रेज अध्यापक कैसे पढ़ाते होंगे, खाने पीने का कैसा प्रबन्ध होगा इत्यादि। सुशील के एक मित्र बी० ए० क्लास के विद्यार्थी कालेज में पढ़ते थे, सुशील ने उनको अपने आगमन की सूचना देदी थी, वह कालेज होस्टल के ६ नम्बर के कमरे में रहते थे। सुशील स्टेशन पर उतरा। कुली से ट्रंक और बिस्तर उठवा कर और एक इक्के पर रखवा सवार हो गया। उसने कुली को २ पैसे अदद के हिसाब से ४ पैसे दिये और इक्के वाले को होस्टल ले चलने को कहा। शहर की कई घूमती हुई गन्दी गलियों से इक्का खड़ २ करता हुआ एक उत्तम और साफ़ सड़क पर आया। सड़क के दोनों ओर बड़े २ पेड़ लगे हुए थे और विद्यार्थियों के खेलने के लिये हॉकीफील्ड, फुट-

बॉलफील्ड और टेनिसकोर्ट बने हुए थे । सामने ही लाल पत्थर की बनी हुई एक आलीशान इमारत दीखती थी। इक्के वाले ने कहा—"बाबूजी यही होस्टल है" वह भी रास्ते भर प्रत्येक वस्तु को एक अजनबी की दृष्टि से देखता आरहा था। खड़ २ इक्का अन्दर पहुंचा । उसके मित्र सज्जनसिंह बरामदे में घूम रहे थे। उसे देखते ही आनंद से हँसते २ दौड़े। सुशील भी एकदम इक्के से कूद पड़ा और नमस्ते कर दोनों बगलगीर होकर मिले। सज्जन चट से सुशील को अपने कमरे में लेगये और उसे कुर्सी पर बिठाकर आप बाहिर गये और आवाज़ दी, 'फराश सामान उठाकर हमारे कमरे में रक्खो, इक्के वाले को उसकी रेट के अनुसार दाम देकर बिदा करो'। सुशील ने इतनी देर में सारा कमरा देख लिया। कमरा चौखूंटा साफ सुथरा सफ़ेदी किया हुआ था। एक दीवार के पास खाट पड़ी हुई थी। और उस पर एक सफ़ेद चादर बिछी हुई थी। एक तरफ एक मेज़ पड़ी थी, मेज़ के सामने ही एक आलमारी थी जिसमें उनकी किताबें रक्खी हुई थीं। खाट के नीचे एक ट्रंक रक्खा हुआ था और एक कोने में हवन कुंड और कुछ समिधा रक्खी थीं और ऊपर के एक ताक में उनकी सुराही, दूसरे कोने में एक छाता और एक बेग रक्खा था और खूंटी पर एक कोट और पजामा लटक रहा था। इतने में सज्जनसिंह आगये। कुशल मंगल के पश्चात् वार्तालाप करने लगे और कहने लगे—इस होस्टल में अस्सी कमरे हैं। प्रत्येक में एक २ विद्यार्थी रहता है। इसके बाहर रसोइयें, वह देखो सामने बनी हुई हैं। हम ६ या ७ लड़के मिल कर एक मेस खोल लेते हैं और हम को हमारे रसोई खर्च में घी समेत १३) तथा १४) रु० मासिक खर्च होजाते हैं। यहां के एक कमरे का किराया

हम को २) महीना देना पड़ता है और कालेज की फीस भी ७) तथा ८) रु०महीना देनी पड़ती है बस, यहां हमारा निर्वाह ३५) रु० माहवार बिना नहीं हो सक्ता है। सुशील कालेज के इस अधिक ख़र्च पर और अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त करने की दिन २ कठिनता पर विचार करने लगा। इतने में सज्जनसिंह बोले-अजी ! लो यहां के ख़र्च की कुछ मत पूछो जिस को यह खोमचेवालों की चाट लगजाती है, बस उसके ४०) रु० माहवार बिना काम ही नहीं चलता और इस पर तुर्रा यह है कि चन्दे तथा दान की एक न एक फहरिस्त प्रत्येक महीने घूमा ही करती है।* सज्जनसिंह बोले-बाक़ी वर्तालाप फिर करेंगे अभी तो शौचादि से निवृत्त होजायें, बस, वे दोनों लोटे हाथ में ले कर शौच को चले। नल से पानी भर कर शौचगृह गये और वापिस आकर हाथ धोकर सुन्दर साफ बने हुए स्नानागार में प्रवेश किया। वहां कहार उनकी धोती, साबुन तथा तैल ले आया था, सो उन्होंने खूब मल कर अच्छी तरह से नल के नीचे बैठ कर स्नान किया। प्रत्येक स्नान करने के कमरे में "शावरबाथ" फंवारा था, सो उन्हें स्नान में बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ। दोनों स्नान कर कमरे में गये और संध्या हवन इत्यादि से निवृत्त हुए। सज्जनसिंह कहने लगे-"हमारे एक यूरोपियन वार्डन हैं। उनको आप होस्टल में भरती होने की अर्जी लिखिये और मैं आपको उनके पास ले चलूंगा, आशा करता हूं, आपको वे भरती कर लेवेंगे। फिर एक कालेज का एडमिशन फार्म भी ले आये और उस को भर दिया और कहा-आज तो आदित्यवार है, कल आपको कालेज में भरती करा दूंगा।

---

* ध्यान रहे कि यह पुस्तक सन् सन् १९११ ई० में लिखी गई थी।

यहां कालेज में भरती होने के लिये लड़के तो अधिक आते हैं और जगह है नहीं, सो कई लड़कों को भरती करने से इन्कार कर देते हैं। परन्तु आफत है केवल बेवसीले और थर्डडिवीजन वाले की। आप तो सेकिंड डिवीजन में पास हुए हैं। आपको तो अवश्य भरती कर लेंगे। इतने में ६॥ बज गये। आज आदित्यवार था सो कालेज के प्रिन्सिपल साहब होस्टल का निरीक्षण करने के लिये आये। प्रिन्सिपल साहब पक्के एङ्गलोइण्डियन थे। मिजाज और मान के मारे कभी विद्यार्थियों से हिल मिल कर नहीं रहते थे। सारे लड़कों ने अपने २ कमरों को साफ करवा लिया था और कुछ शौकीन लड़कों ने अपने कमरों में दरियां गलीचे बिछा रक्खे थे और दीवारों पर तसवीरें लटका रक्खी थीं, सारे लड़के साफ २ कपड़े पहिन कर और अपने कालेज के रंग के साफे बांधकर अपने २ कमरों के सामने खड़े होगये। साहब बहादुर उनके पीछे २ उनका सुपरिन्टेन्डेन्ट, दबी बिल्ली के समान, काग़ज़ पेंसिल हाथ में लिये आरहा था और उनके साथ २ उनका खुशामदी मानिटर 'हां हजूर' करता २, मानों उसे आज ही डिप्टीकलेक्टरी मिल जायगी, आरहा था। साहबबहादुर को हरएक गुडमार्निंग करने लगा और वे प्रत्येक कमरे में घुस २ कमरे की किताबों तक को देखते थे। वे प्रत्येक हिन्दी की पुस्तक, जो किसी की आलमारी में मिल जाती, बड़े ग़ौर से और मुंह बना कर देखते थे। मानो हिन्दी की किताब राजद्रोह से भरी है। अस्तु, साहब का निरीक्षण खतम हुआ। तत्पश्चात् सज्जनसिंह के कमरे में आकर कहार सुराही भर गया और मर्तबान में से घी निकाल कर ले गया और कह गया—"बाबू साहब! भोजन तैयार है" बस, वे दोनों रसोई में पहुंचे, एक २ के

लिये अलग २ चौका बना हुआ था। वे एक २ चौके में बैठ गये। यहां गुरुकुल के समान एक डाइनिंग हॉल सब विद्यार्थियों के लियें नहीं था। ब्राह्मण रसोइये ने उनको थाली ऊपर से फेंकी और दाल इस तरह से चौके में ही सुकड़ कर परोसी मानों उनकी थाली में कोई बिच्छू और सांप है, जो उसे काट खायगा। सुशील को ब्राह्मण के ऊंचे २ से फुलके पुरसना इत्यादि देख कर ज़ोर से हँसी आगई, इस पर सज्जनसिंह भी हँस पड़े और कहने लगे भाई अभी तक इन प्रान्तों में चौके का भूत सवार है और यदि यह कच्चा, पक्का, सखरी, निखरी इत्यादि का ध्यान न रक्खें तो हमारे चौके के कई काशीदास बुद्धुमल जैसे विद्यार्थी भोजन तक न करें। भोजन के पश्चात् उनके बाहिर खड़े कहार ने हाथ धुलाये और एक सफेद तौलिये से हाथ पूंछे फिर वे वहां से होस्टल के कामन रूम में गये। वहां सुशील ने देखा कि बहुत से लड़के नंगे सिर, पैरों में काले स्लीपर कमीज़ और सफेद बंगालियों की तरह धोतियें पहिने बैठे हुए थे और बहुत से लड़के मूछों पर ताव लगाते हुए पेट पर हाथ फेरते हुए भजन के पश्चात् आ आकर बैठते जाते थे। उनमें बहुनसे अंग्रेज़ी बाल रक्खे हुए थे और सुगन्धित केश-रंजन तैल उनके सिर पर लगा हुआ था। उनकी बालों की मांग कढ़ी हुई भली मालूम होती थी। सुशील ने भी मेज पर के अखबार देखने शुरू किये, परन्तु जब उसने अपनी मातृभाषा हिन्दी का एक भी अखबार वहां पर न देखा तब उसके आश्चर्य की सीमा न रही और सज्जनसिंह से पूछने पर पता लगा कि विद्यार्थियों के बहुत कुछ कहने सुनने पर भी हिन्दी की कोई पत्रिका नहीं आती। आर्यसामाजिक पत्र तो दूर रहे साहबबहादुर को प्रत्येक हिन्दी पत्र में राजद्रोह की गन्ध आती है। हिन्दी में ही नहीं

हिन्दुस्तानी मात्र से डर लगता है । इसीलिये यहां पर न तो हिन्दुस्तान रिव्यु, न मार्डन रिव्यु, न बंगाली, न अमृतबाजार-पत्रिका ली जाती है। जब विद्यार्थियों ने बहुत कुछ प्रार्थना की और यह कहा कि अखबारों के लिये हम ही रुपया देते हैं तो भी हमारी राय का अखबार क्यों नहीं आता है, तब बहुत कठिनता से "लीडर" मंगाने का हुक्म हुआ है। सुशील को विद्यार्थियों की गुलामी और पराधीनता पर बहुत शोक हुआ। जब उसकी नजर अखबार पढ़ने की मेज से दूसरी तरफ़ गई तो उसने देखा, कुछ लड़के शतरंज खेल रहे हैं, कुछ क्रीकोनल, कुछ पिंगपांग और कुछ बिज़ीक़ और तरह २ के खेल खेल रहे हैं। खूब ज़ोर से हँसी मज़ाक हो रहा है और कुछ दुष्ट विद्यार्थी सज्जनसिंह को देख कर उन पर आवाज़ें कसने लगे "देखो सज्जन ! अब तो तुम्हारे गहरे हैं, भाई हमारा भी हिस्सा है"। सज्जनसिंह समय के बड़े पाबन्द थे। उन्होंने अपनी जाकट से घड़ी निकाल कर देखी और कहा—ग्यारह बज गये, अब कमरे में चलना चाहिये। बस, वे दोनों कमरे में पहुंचे। सुशील ने सज्जनसिंह से पूछा कि उन विद्यार्थियों का इन आवाज़ों से क्या मतलब था? सज्जनसिंह बहुत गम्भीर भाव से कहने लगे—"भाई! यह गुरुकुल तो है ही नहीं जहां प्रत्येक लड़का ब्रह्मचारी हो। यहां पर सब १७ से लेकर २२ वर्ष तक के विद्यार्थी रहते हैं और हमारे देश की कुप्रथा के अनुसार प्रायः सब के सब विवाहित होते हैं और वे फर्स्ट इयर में आये हुए नये खूबसूरत विद्यार्थियों को दिक करने में प्रसन्न होते हैं। जो बेचारा नया विद्यार्थी इन दुष्टों के चंगुल में फँस जाता है, उसकी आयु यह खराब कर देते हैं। इन लोगों में से कुछ मांस मदिरा तक का सेवन करते हैं और शाम को तेल वेल लगा कर कंघी

चोटी कर अच्छा सूट डाट कर चौक में जाते हैं और झरोकों की तरफ़ नजर दौड़ाते हैं और यदि किसी अप्सरा ने मुसकरा कर इनकी नजर से नजर मिलाई तो अपने को धन्य समझते हैं। यहां पर धार्मिक तथा सामाजिक चर्चा करना तो मना ही है फिर भला लड़के क्यों न ख़राब होंगे? यहां पर विद्यार्थियों में धार्मिक जीवन लाने के लिये आर्यकुमार सभा है और थोड़े बहुत विद्यार्थी डरते २ उसमें जाते हैं, इसी कारण से थोड़े से विद्यार्थी दुष्कर्मों से बचे हुए हैं। इस प्रकार बातें करते २ सफर की थकावट के कारण सुशील को तो नींद आगई और सज्जनसिंह कुछ पढ़ने लगे। क़रीब दो बजे होंगे कि उनकी आंख खुली और कानों में बरामदों में घूमते हुए खोमचे वालों की आवाज़ें पड़ने लगीं। कोई खोमचा वाला कमरे के सामने खड़ा होकर कहता था—'कुछ खाओगे बाबू साहब' कोई आवाज़ देता था "रबड़ी मलाई की बरफ" कोई कहता था—"खटाई की चाट" "मिठाई" "केला सेव नास्पाती" सुशील ने बाहिर बरामदे में आकर मुंह धोया। सज्जनसिंह ने कहा कि कुछ दोपहरी करलो, सुशील ने देखा कि सब लड़के बरामदों में निकल आये हैं और चीलों की तरह खोमचेवालों पर टूट पड़े हैं "मिठाई" और "खटाई" के खोमचेवालों के पास भीड़ अधिक थी। सज्जनसिंह ने फलवाले को बुलाया और उससे कुछ फल लिये। वे दोनों कुर्सी पर बैठ कर फल खाने लगे और वार्त्तालाप करने लगे कि यहां पर खोमचेवाले चीजें मंहगी बहुत देते हैं। बाज़ार से डयोढ़े दुगुने दाम लेते हैं, तिस पर भी धृष्टता यह है कि चीज़ें रद्दी बेचते हैं। सज्जनसिंह ने कहा-यह लाइसेन्स प्राप्त होने पर भी ऐसा करते हैं, दाल में ज़रूर काला है, यहां पर विद्यार्थी इन खोमचेवालों से उधार खाजाते हैं और

फिर वृथा अपव्यय के कारण से महीने के अन्त के पहिले ही दिवालिये हो जाते हैं। अड़ोस पड़ोस के कमरे वालों से उधार मांगा करते हैं या अपने पिता से झूठे बहाने बनाकर रुपये बंधे हुए खर्चे से अधिक मंगाते हैं। वे लोग यह वार्त्तालाप कर ही रहे थे कि ज़ोर की आंधी आई। वर्षाऋतु तो थी ही जुलाई का महीना था बात की बात में ही आकाश काले काले बादलों से आच्छादित हो गया और मूसलाधार पानी बरसने लगा। कुछ खुले दिल वाले नवयुवक जल्दी से कपड़े खोल कर होस्टल के लान पर आ डटे और लगे नहाने और ज़ोर से चिल्लाने। उनके होस्टल की हरी२ दूब में नीची ज़मीन पर ढलाव होने के कारण खूब पानी भर गया। फिर तो भाई वहां खूब मज़ाक रहा। बेचारे लड़कों को जो कि वर्षा में नहाने में उनके साथी नहीं हुए थे वे लोग कपड़े समेत कमरे में से पकड़ २ कर लाने लगे और उस भरे हुए पानी में गिराने लगे। जो कोई कपड़ा पहने जाता था बिचारा गीले कपड़े हुए कीचड़ में लथपथ हो जाता था। यह मज़ाक ४ बजे तक होता रहा। इतनी देर में वर्षा भी बन्द हुई और फिर धूप पड़ने लगी। हाक़ी की और फुटबालफील्ड की ज़मीन सब पानी को शोख गई। और चूने के बने हुए टेनिस-कोर्ट तुरन्त सूख गये। कुछ लड़के नहाधोकर घुटने तक का हाफपेन्ट, सफेद कमीज और फुटबॉल बूट पहिन कर फुटबॉल तथा हाक़ी खेलने लगे। कुछ शौकीन लड़के सूट डाटकर और एक सुन्दर टेनिस रेकट हाथ में लेकर टेनिसकोर्ट में जा पहुँचे। सुशील ने स्कूल में कभी टेनिस नहीं खेला था सो उसे भी टेनिस खेलने का शौक उत्पन्न हुआ और वह भी सज्जनसिंह का रेकट लेकर टेनिसकोर्ट पर जा पहुँचा। सज्जनसिंह भी

साथ हो लिये थे। सुशील खेलना नहीं जानता था, उसे किसी ने भी नहीं सिखाया क्योंकि नये लड़के के साथ खेलने से खिलाड़ियों का खेल बिगड़ता है। सज्जनसिंह ने कहा—भाई! तुम्हारा साथी तुम्हारा ही जैसा होना चाहिये। इतने में ही उस जैसे नये शौकीन एक फर्स्ट इयर के विद्यार्थी आये। सज्जन-सिंह ने चट उससे सुशील को परिचित कराया और उनको एक एक कोर्ट में आमने सामने खड़ा कर दिया और आप खड़े हुए देखने लगे। बीच २ में खेलना बता भी देते थे। वे उनके एम्पायर भी थे। उन्हें सर्विस करना तो आता ही नहीं था, गेंद को बल्ले से मारते यदि इस कोर्ट में फेंकना चाहते तो दूसरे में गिर जाता, यदि सर्विस सही भी पड़ती तो रिटर्न नहीं होता था। गेंद को धीरे से मारने के बजाय ज़ोर से मार देते। बस, फिर क्या था मानो क्रिकेट की बाउन्डरी होजाती और सब दर्शक विद्यार्थी हंसते। शाम हुई और खेल खतम किया। सज्जनसिंह सुशील से कहने लगे—तुम्हें कुछ दिन में अच्छा खेलना आ जायगा, तुम निराश मत होओ। वे दूब पर बैठ कर पसीना सुखाने लगे। इतने में ही सात बजे और सज्जनसिंह ने कहा-अब भोजन करना चाहिये। शाम को पूड़ियाँ बनती हैं सो भोजन यहीं दूब पर मंगाकर खायेंगे। भोंदू कहार को दो थालियाँ परोस कर जल्दी लाने को कहा और वह कहार थालियों में गर्मागर्म पूड़ियाँ, आलू का शाक और दही का रायता रख कर दौड़ कर ले आया। खूब आनन्द हँसी मज़ाक करते हुए उन्होंने भोजन किया। भोजन कर ही चुके थे कि घण्टा बजा। सुशील ने सज्जनसिंह से पूछा, यह किस बात का घण्टा है। उन्हों ने उत्तर दिया आज साहित्य समिति की सभा है। यह होस्टल के कामन रूम में होती है। आज के

विवाद का विषय गोखले का प्रारम्भिक शिक्षा बिल है। आज हमारे बार्डन शूशू साहब सभापति के आसन को ग्रहण करेंगे। (इन को विद्यार्थी इस नाम से ही पुकारते थे क्योंकि यह फ्रांसीसी होने के कारण अंग्रेजी शब्दों का शुद्ध उच्चारण नहीं कर सकते थे और लड़कों को इनकी बात समझ में नहीं आती थी इसीलिये इनका नाम "शूशू" कर दिया था) "शूशू" साहब हमारे बोर्डिंग के अधिष्ठाता हैं। आज का विषय दिलचस्प है इसलिये विद्यार्थी अधिक आवेंगे, नहीं तो विद्यार्थी सभा में कम आते हैं। क्योंकि साहित्य-सम्बन्धी विषयों को छोड़कर दूसरे विषय कभी रखने का हुक्म ही नहीं और केवल साहित्य विषय रुचिकर नहीं होते। अस्तु, यह सुनकर कमरे में वे दौड़े और जल्दी से गोखले की स्पीच के तीन अच्छे जुमले रट लिये। इतने में ही सज्जनसिंह कोट पहिन कर तयार हो गया। दूसरा घण्टा बजा और सब लड़के कमरों से निकल २ कर कामनरूम में बेंत की कुर्सियों पर बैठने लगे। इतने में ही शूशू साहब आगये। लड़कों ने उठ कर अभिवादन किया और सभा के मन्त्री ने गत सप्ताह की कार्यवाही पढ़नी आरंभ की। तत्पश्चात् वाद आरंभकर्त्ता ने वाद आरंभ किया और विपक्षी ने खण्डन किया। दोनों उपर्युक्त महाशयों ने किसी अंग्रेजी अखबार में से चुराकर ज्यों-का-त्यों काग़ज़ पर लिखा था। वहाँ फराटवन्द उसको पढ़ दिया और तालियाँ खूब पिटीं। फिर इसके बाद दोनों पक्षों के विद्यार्थी एक एक के पश्चात् अपने रटे हुए कुछ अंग्रेजी के टूटे फूटे जुमले आ आकर बोलने लगे और सुशील भी अपने तीन रटे हुए जुमले बोल गया। सज्जनसिंह भी अच्छे बोले। प्रत्येक वक्ता के खड़े होते और भाषण समाप्त करते समय खूब जोर से तालियाँ पीटी जाती थीं। और

जब कोई देशभक्ति का कोई वाक्य कह देता था तो सुनो, सुनो (hear hear) की आवाज़ें होती थीं। जो विद्यार्थी बिना याद किये वैसे ही बोलने खड़ा हो जाता, तो बड़ा हास्यपात्र होता था, क्योंकि वह अंग्रेजी बोलने में अधिक ग़लतियाँ करता और एक आध वाक्य बोलते ही अवाक् हो जाता था। ६ बजे और सभापति ने अपनी वक्तृता थोड़े से शब्दों में समाप्त की। बहुतों को तो साहबबहादुर का एक शब्द भी समझ में न आया, परन्तु अन्तिम वाक्य का यह अर्थ था कि तुमको वोट(vote) से यह मामला तय करना चाहिये। पहिले उन विद्यार्थियों को हाथ उठाने के लिये कहा गया, जो कि गोखले के पक्ष में थे। सारे के सारे विद्यार्थियों ने हाथ ऊंचा कर दिया। यहां तक कि उन्होंने भी हाथ उठादिया जिन्होंने कि विपक्ष में कहा था। फिर प्रारम्भिक शिक्षा के विरुद्ध वालों से वोट देने को कहा गया, परन्तु एक ने भी वोट नहीं दिया। यह देखकर सभापति ने गोखले के बिल के पक्षवालों की जय उच्चारण की और करतलध्वनियों से सारा हॉल गूंज उठा। सभापति अपने घर गये और विद्यार्थी कोलाहल करते हुए बाहिर निकले। इतने में ही ६॥ बजे की घण्टी बजी। विद्यार्थी अपने २ मानीटरों के कमरे में जाकर अपने हस्ताक्षर उपस्थिति के काग़ज़ पर करने लगे। गर्मी अधिक थी इसलिये सभी ने अपनी खाटें हरी २ घास पर मैदान में बिछवाई थीं। कुछ दिलचले लड़के एक हारमोनियम ले आये और गाने लगे। कोई २ विद्यार्थी बांसुरी अच्छी बजाता था। बहुतसे विद्यार्थी अपनी २ खाटों पर पड़े हुए सुनते रहे। कुछ विद्यार्थी सोगये थे और कुछ विद्यार्थी उनकी खाटों के नीचे घुसकर एक ज़ोर का धक्का (push) ऊपर मारते और बिचारा सोता हुआ ल-

इका धड़ाम से भूमि पर गिर पड़ता और उस पर उसके बिस्तरे और खाट गिर जाती। सारे लड़के खूब जोर से हंसते और वह लड़का बड़ा लज्जित होजाता और उसकी नींद वींद सब उड़ जाती। बस, इस तरह की धूम १२ बजे तक अपस में होती रही। इतने में कुछ विद्यार्थियों को टेढ़ी सूझी। एक धौंकलसिंह बेचारा सेकिन्डइयर का विद्यार्थी कुछ थके होने के कारण गहरी नींद में खुर्राटें भर रहा था। उन्होंने बड़ी सावधानी से उसकी खाट उठाई और सामने के एक बंगले के कम्पाउण्ड में, जिसमें कि एक अंग्रेज़ डाक्टर रहता था, उधर जा उसकी खाट रख आये। बंगले के कुत्तों ने यह देखकर ज़ोर से भौंकना शुरू किया और उसकी खाट के चारों तरफ भूं भूं करने लगे। बेचारा धौंकलसिंह एकाएक चौंक कर उठा और अपने को अजनवी जगह में पाकर अचम्भित हुआ। उसके उठने पर कुत्ते अधिक भौंकने लगे। इतने में डाक्टर साहब भी उठ खड़े हुए और एक खाट पर आदमी को बैठा देखकर बड़े चकराये और धौंकलसिंह को क्रुद्ध होकर डाटने लगे और कहने लगे–'तुम हमारे बिना इजाज़त आगया है, तुम को पुलिस के हवाले किया जायगा'। धौंकलसिंह ने बड़ी कठिनता से साहब को समझाया कि वह होस्टल का विद्यार्थी है, परन्तु अपने आने का कारण धौंकल बता न सका। अस्तु, डाक्टर साहब ने सब सामान उठाकर जल्द निकल जाने को कहा। वह बेचारा खाट हाथ में लिये और बिस्तर सिर पर लादे हुए बंगले से निकला। एक तो अंधेरा और दूसरे खाट और बिस्तर से लदे हुए धौंकलसिंह होस्टल के फाटक से टकराकर धड़ाम से गिर पड़े। असली शरारती लड़के तो चादरें ओढ़ २ कर सोगये। वे मानो कुछ जानते ही नहीं। किसी २ के हँसी के मारे पेट में

बल पड़ रहे थे। धोंकलसिंह की दशा विचित्र थी, वह बेचारा उसे मन में जानता होगा। जैसे तैसे हँसी रोक कर सज्जनसिंह ने उसको उठाया और खाट उठाने में मदद दी। कुछ मक्कार लड़के मज़ाक करने के लिये आकर पूछने लगे, कहो धोंकल! क्या हुआ? रात का एक बज चुका था, सुशील की आंखें नींद से भारी हो रही थीं। वह होस्टल के केवल एक दिन आदित्यवार के जीवन पर तरह २ के विचार करने लगा। जब इन विद्यार्थियों का जीवन वह गुरुकुल के विद्यार्थियों से मिलान करता तो अतीव अन्तर प्रतीत होता। यह विचार करने लगा कि भारतवर्ष में कब वह पवित्र घड़ी आवेगी जब प्रत्येक कालेज के विद्यार्थी गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के समान पवित्र देवमूर्तियां होंगी। विद्यार्थी-सुधार की तरह २ की बातें सोचते २ उसे नींद आगई और फिर दीन दुनियां की सुध न रही। दूसरे दिवस सज्जनसिंह ने सुशीलचन्द्र को कालेज और होस्टल दोनों में भरती करा दिया और पठन पाठन शुरू होगया।

द्वितीय परिच्छेद

—:o:—

प्रातःकाल का समय है। कृष्णपक्ष की द्वितीया है। प्रातःकाल होने पर भी अर्द्धचन्द्र आकाश से मन्द मन्द ज्योति भूमितल पर फेंक रहे हैं। भगवान् भुवनभास्कर अभी उदय नहीं हुए हैं। सारी प्रकृति सूर्य भगवान् की बाट जो रही है। कमल मारे प्रसन्नता के खिल रहे हैं। सूरजमुखी ने सूर्य की ओर अपना मुख कर लिया है। गुलाब की कलियों की सुगन्ध वायुमण्डल में फैलकर प्रेम और आनन्द का संचार कर रही है। इस आनन्द के समय में हमारे चरित्रनायक सज्जनसिंह किताब हाथ में लिये हुए बोर्डिङ्गहाउस की छत पर सुगन्धमयी वायु का सेवन करते हुए इधर उधर टहल रहे हैं और कुछ विचार में निमग्न हैं। इतने में एकाएक पूर्व की तरफ़ उनकी दृष्टि जाती है। अहा! कैसा मनोहर दृश्य है। सूर्य देवता आधे बादलों में छिपे आधे बाहिर निकले हुए रक्त वर्ण का परिधान पहने हुए अर्धगोलाकार रूप धारण किये हुए मुदितमन सर्व संसार को जगा रहे हैं। इधर सामने के कालेज-फील्डों की हरी हरी दूब कैसी शोभायमान प्रतीत होती है। उस पर शुभ्र बिन्दुओंवाली ओस कैसी मनोहर मालूम होती है। दूब पर बिखरे हुए ओस के श्वेत कण सूर्य्य के द्वारा चमक पाकर ऐसे ज्ञात हो रहे हैं मानो रात्रिदेवी ने शान्ति के १० घण्टे पाकर, बड़े परिश्रम से इन मोतियों को दूब की पत्तियों में गूंथ दिया है। इस उषाःकाल के मनोरम नाटक में भाग लेने के लिये

प्राणीमात्र उत्सुक से दीख पड़ते हैं। उधर कौवों की किरां किरां हो रही है और चिड़ियां अपने घोंसलों से निकल कर चांचूं मचा रही हैं। वह देखो! वे दो तोते कैसे सुन्दर हैं। कैसी स्वतंत्रता से एक पेड़ से उड़ कर दूसरे पेड़ पर जाते हैं और किलोलें करते हुए विचरते हैं, परन्तु इन तोतों के मधुर स्वर, कौवों की स्वच्छन्द, परन्तु मक्कार कांय कांय और चिड़ियों की भोली चांचूं में ऐसा मालूम होता है जैसे बाज़ार के बैण्ड बाजों में लोहे के बार की टन टन आवाज़। वह देखो! नाना प्रकार के रंग बिरंगे पक्षी अपने साथियों के साथ वायु-मण्डल में कैसे आनन्द से चक्कर लगा रहे हैं। सारांश यह है कि सब पशु, पक्षी इस समय बिना एक दूसरे के भय तथा आश्रय के स्वतन्त्रतापूर्वक अपने २ ईश्वराधन के भजन गा रहे हैं। मनुष्य भी कैसा विचित्र है कि वह इन प्राकृतिक शोभाओं का अर्थ अपनी वृत्ति के अनुसार नाना प्रकार के लगा लेता है। आज यदि वह शोक-निमग्न है तो यही शब्द उसे इस समय रोने पीटने के शब्द प्रतीत होते हैं। आज यदि वह अपने घर विदेश से आया है तो यही शुभागमन के प्रतीत होते हैं। अस्तु, हमारे सज्जनसिंह ने भी धार्मिक वृत्ति के होने के कारण, इस प्राकृतिक शोभा को भगवत्-स्मरण तथा आत्मिक स्वतन्त्रता का ईश्वरदत्त गुह्य आदेश समझा।

इन पक्षियों की स्वतन्त्रता को देख कर सज्जनसिंह को कालेज की प्रार्थना का ध्यान आ गया। वह सोचने लगे कि जहां परमात्मा की प्रार्थना अपने उद्देश्यों को उच्च बनाने के लिये तथा उन पर चलने के लिये की जाती है, वहां हम अपने कालेजों में उन्हीं उद्देश्यों को नीचा करने के लिये करते हैं। ओफ! हम कैसे अभागे और निर्बुद्धि हैं कि जहां एक

मामूली पक्षी भी परमात्मा से कांय २ या चांचूं करके अपनी भाषा द्वारा हमेशा प्रार्थना करता है, वहां हम अकेले नहीं, दोकले नहीं, सब के सब मिल कर एक अजनबी क्लिष्ट और विदेशी भाषा में प्रार्थना करते हैं, जहां नीच से नीच पशु पक्षी तक यहां तक कि गधे भी रात के ४ बजे रेंक कर स्वतंत्रतापूर्वक प्रार्थना करते हैं, वहां हम एक काले चोगेधारी विदेशी द्वारा आजन्म इस स्वतंत्रता को दूर रखने की प्रार्थना करते हैं। कालेज में सदा इस बात की प्रार्थना करते हैं कि हे परमात्मन्! हम सदा दूसरों के आधीन रहें। यह शब्द उसके हृदय में शूलवत् चुभते हैं। उसे वे वैदिक प्रार्थनायें स्मरण आती हैं जब कि ऋषि, मुनि परमात्मा से प्रातःकाल गङ्गा, यमुना के पवित्र तट पर बैठ कर उच्च से उच्च आदेशों को प्राप्त करने की प्रार्थना करते थे, हा! कहां तो अपने लिये स्वतन्त्रता की प्रार्थना! और कहां कोट बूट डाटे हुये परतन्त्रता की प्रार्थना! ऐसे नाना प्रकार के विचार करते २ सज्जन संध्या करने बैठ गये और अग्निहोत्र कर अपनी पुस्तक हाथ में ले नीचे उतर आये।

सज्जनसिंह कई कारणों से घर नहीं गये थे, परन्तु उन के सहपाठी आज ही दिवाली की छुट्टियों के पश्चात् घरों से लौट कर आये थे। सब आपस में प्रेम से मिल रहे थे। कहिये साहब! आप कब तशरीफ़ लाये?, छुट्टियां कैसे कटीं?, इत्यादि प्रश्न सब एक दूसरे से कर रहे थे। यह मामूली बात है कि छुट्टियों से लौट कर एकाएक पढ़ने में मन नहीं लगता, नाना प्रकार के घरेलू विचार मस्तिष्क में घूमा करते हैं। ऐसी निठल्ली अवस्था में विद्यार्थियों को तरह तरह की शरारतें, मज़ाक व हँसी दिल्लगी सूझा करती है, इसलिये जब सज्जन-

सिंह नीचे उतरे तो विद्यार्थी-जीवन का अपूर्व ही दृश्य देखते हैं। पाखाने के पास एक लड़के की खाट रक्खी है। लड़का उस पर लिहाफ ओढ़े सोया हुआ है। पास ही पानी से भरा एक तामलोट रक्खा हुआ है। सामने ही नल के पास कुछ विद्यार्थी लोटे हाथों में लिये खड़े २ हँस रहे हैं। एक कहता है—यह कुम्भकर्ण यहां क्यों सो रहा है? दूसरा कहता है—भाई! इन्होंने जुल्लाब लिया है। रात भर से इन्हें दस्त हो रहे हैं। कमरे से पाखाने तक आने जाने का कौन कष्ट उठावे, इसलिये इन्होंने यहां ही अपना डेरा ला ताना है। कुंभकर्ण वास्तव में कुंभकर्ण ही थे, इन्हें नींद बहुत ही बेसुध आती थी और ये प्रातःकाल बहुत देर में उठा करते थे। विद्यार्थी इनकी यह आदत छुड़ाना चाहते थे। इसी लिये आज यह मज़ाक किया जारहा था। कुंभकर्ण इन करतूतों से भी अभी तक खाट से नहीं उठे थे। जब सूर्य्य की प्रखर किरणें उनके लिहाफ पर पड़ने लगीं तब वे मारे गर्मी की कुचमचाहट से उठ बैठे। उठते ही देखा कि तामलोट सामने भरा रक्खा है पाखाने के पास खाट है और मज़ा यह है कि बग़ल में उनका हुक्का भी रक्खा है। बहुत चकराये, बहुत बिगड़े, आग बबूला हो गये और लड़कों पर लाल पीले होने लगे, पर नक्क़ारखाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है? बीस, पच्चीस विद्यार्थियों के जोर से हँसने, क़हक़हे मारने से वे स्वयं ही अति लज्जित होगये और मारे झेंप के कमरे में जा बन्द हुये। मज़ाक, चुलबुलापन, विद्यार्थियों की प्रकृति हो जाती है। अस्तु, उसी दिन रात्रि को एक दूसरे विद्यार्थी पर और भी बुरी बीती। एक विद्यार्थी गाढ़ निद्रा में सो रहा था, दो लड़कों को टेढ़ी सूझी। एक ने बड़ी सावधानी से अपना स्लीपर (जूता) उस

लड़के के हाथ में पहिना दिया और उसके हाथ से कस कर बांध दिया। तत्पश्चात् दूसरा अपनी चोटी का बाल तोड़ कर उसके मुंह पर फेरने लगा। सोये हुए लड़के को मालूम हुआ कि कोई कीड़ा उसके मुंह पर रेंग रहा है। नींद में उसे बड़ी झुंझलाहट आई। गुस्से में आकर अपने हाथ को, उसके हटाने के लिये, " कस " कर घुमाया और तड़ाक से हाथ में पहिना हुआ स्लीपर अपने गाल पर रशीद किया। यह देख कर और सुन कर और लड़कों की तो हँसी का ठिकाना न रहा और उस बिचारे लड़के का गाल सुर्ख हो गया और उसे अपने ही हाथ अपने को जूता मारने पर शोक, क्रोध और लज्जा आई। तीसरे विद्यार्थी बिचारे धोंकलसिंह की बेतरह बीती। ४ वा ५ शरारती लड़कों ने खाट पर से उसे बिस्तर समेत उतार कर ज़मीन पर ऐसे धीमे से और आसानी से सुला दिया मानों एक मरण-समय के निकट पहुँचे हुए हिन्दू को उसके ४ संबन्धियों ने निश्चलभाव से उसको ज़मीन पर लेटा दिया है। चार ईंट उसके चारों कोनों पर रखदीं और बहुत ही धीरे से उन ईंटों पर उल्टी खाट रख दी गई। जब तक धोंकल चित्त सोता रहा तब तक उसे गाढ़ निद्रा में यह मालूम नहीं हुआ कि वह भूमि पर शयन कर रहा है या खाट पर, परन्तु ज्योंही उसने करवट बदली वह चौंका। " क्या गज़ब है ? मुझे कहीं स्वप्न तो नहीं आरहा है"। इस प्रकार सोचने लगा। पर जब उसने बैठने की कोशिश की और उसकी आंख खुली तब उसे सारा रहस्य मालूम हो गया। बेचारा चुपचाप उठा। कहीं दूसरों को मालूम न हो जावे, इस भय से चारों कोने चित्त पड़ी हुई खाट को होशियारी से उसने उठाई, उस पर बिस्तर जमा फिर सो रहा। सज्जनसिंह उपर्युक्त पहिली बात को आंखों से देख कर और दूसरी तीसरी बात को श्रवण कर मुस्कराते हुए अपने कमरे में गये और अध्ययन में लग गये।

तृतीय परिच्छेद

—:o:—

क़रीब पौने दस बजे हैं, बहुत से लड़कों ने स्नान कर लिया है और भोजन कर के भोजनशालाओं से अपने २ कमरों की ओर चले आ रहे हैं। किसी ने कोट पहिना, किसी ने पतलून डाटा, कोई दर्पण के सामने अपने गले की पट्टी ही सुधार रहा है। कोई बालों में तैल लगा कर मांग निकाल रहा है। कोई बूंट के तस्मे बांध रहा है। कोई पुस्तकें सम्हाल रहा है। कोई सब कपड़ों से लैस होकर अपने मुख को तीसरी बार आइने में देख रहा है। इतने में ही घण्टा टनाटन २ बजने लगा। विद्यार्थी कमरों से बाहिर निकल रहे हैं। बस्ता हाथ में ले, खटाखट मिलस के ताले कमरों में लगा रहे हैं। बाइसिकल वाले फैशनेबिल विद्यार्थी, जिनका बोर्डिंग कालेज से कुछ फासले पर है, तीर की तरह, यह जा, वह आ, बात की बात में हांफते हुए कालेज पहुँचे। हमारे चिरपरिचित बेचारे धोंकलसिंह को, जो अभी रात की बीती हुई को नहीं भूले थे, नहीं मालूम, कैसे आधे मिनट की देरी हो गई। अभी घण्टे की आखिरी टङ्कार कानों में गूंज ही रही थी कि बेचारे धोंकलसिंह दौड़ते हांफते कालेज पहुँचे। एक पैर हॉल के दरवाजे पर रक्खा ही था कि काले चोगे पहिने हुए एक विदेशी ने कहा–"बस अब नहीं आ सकते, घण्टा बज चुका"। बहुत कुछ समझाने बुझाने पर भी काले चोगेधारी प्रोफेसर ने एक न सुनी। क्योंकि इन लोगों को यह गुरुमन्त्र पढ़ाया जाता है कि यदि तुम इस प्रकार मान जाया करोगे तो कालेज की

आमदनी में फर्क आ जायगा। बिचारे धौंकलसिंह आधे भीतर, आधे बाहिर त्रिशंकु की तरह वहीं सन्न रह गये, न इधर के रहे न उधर के रहे, अन्ततोगत्वा सोचा "कालेज वाले जुर्माना किये बिना मानते ही नहीं। फिर होस्टल में चल कर मौज ही क्यों न उड़ावें। एक दुअन्नी में ही तो दिन भर की छुट्टी मिलती है।" बस फिर क्या था। सीधे बेनकेल के ऊंट की तरह होस्टल में आ डटे और बीमार पड़े हुये लड़कों से कालेज की बीती सुनाने लगे। लड़कों को भी बातचीत के लिये नया विषय मिला। नमक मिर्च लगा कर बेतुकी हांकने का भी अच्छा अवसर मिला। बिचारे धौंकल ने दोअन्नी की चपत खाई सो तो खाई ही, मज़ाक उड़ने लगा सो बट्टे खाते।

दोपहर के पश्चात् सूर्य्य की प्रखर किरणों से तप्त सड़क पर दो बजे से ही, ए० कोर्स पढ़ने वाले विद्यार्थी कालेज से पढ़ कर वापिस लौटने लगे। ए० कोर्स वाले विद्यार्थी बी० कोर्स वालों से अधिक आनन्द किया करते हैं, क्योंकि बी० कोर्स में तो प्रैक्टिकल भी करना पड़ता है। प्रायः कालेजों में नियम यह होता है कि प्रोफेसर गर्मी की छुट्टियों में या और कभी, पढ़ाई की किताबों पर नोट (टीकायें) लिख लेते हैं और फिर स्वयं प्रतिवर्ष वैसे के वैसे ही नोट लिखवाया करते हैं। बिचारे लड़के गुमाश्तों या रिपोर्टरों की तरह बराबर लिखते रहते हैं। लड़के असली किताबें बहुत कम पढ़ते हैं। केवल इन्हीं नोटों को वेदवाक्य मान कर खूब घोटते हैं। प्रोफेसर भी काले २ चोगे पहिन कर कुर्सियों पर बैठे आनन्द उड़ाया करते हैं। कोई २ तो क्लास में ही बैठे २ चुरटें पिया करते हैं। जब कभी विश्वविद्यालय वालों ने पढ़ाई की किताब पलट दी तो झट दूसरी किताबों पर नई टीका

लिख डाली । भला सोचिये तो, क्या प्रोफेसरों का काम केवल नोट लिखाने का है और विद्यार्थियों का काम केवल नोट याद करने और लिखने का है। यदि कालेज-शिक्षा का यही अभिप्राय है, जैसा कि आजकल आचरण किया जाता है, तो बलिहारी है ऐसी शिक्षा की और शिक्षकों की ! इन्हीं नोटों को घोटते २ हमारी विचारशक्ति नष्ट हो जाती है और इन्हीं के कारण भारत में नये २ आविष्कार करने वाले पैदा नहीं होते। ए० कोर्स वालों के जल्दी आने का कारण आप भलीभांति समझ गये होंगे। कठिनाई थी तो बेचारे बी० कोर्स वालों की। बी० एस० सी० वाले पूरे ६ या ७ घण्टे कालेज में पिलते थे और होस्टल आकर भी इनको कठिन परिश्रम करना पड़ता था। अस्तु ! इस प्रकार विद्यार्थियों को होस्टल में लौटते २ सन्ध्या होगई।

चतुर्थ परिच्छेद

—:o:—

संध्या का समय था। सूर्य्यदेव अपनी दिन भर की यात्रा समाप्त कर पश्चिम दिशा में अस्त हो रहे थे। संसार भर में कोलाहल मच रहा था। कहीं तो बाबू दफ़्तरों से थके मांदे लौट कर अपने घरों में अपने प्यारे बच्चों की तोतली २ बातें सुन कर अपने सारे दिन का क्लेश भूल कर, मुदितमन हो, बच्चों से खेल रहे थे। किसी २ बाबू की सुशिक्षिता सुशीला पत्नी अपने थके मांदे पति को कोकिलवाणी से भजन सुना २ कर, उनका थकान उतार रही थी। किसी २ गृह में सास बहू में देवासुर-संग्राम होने के कारण खाना ही नहीं बना था और बिचारे दिन भर के थके बाबू घर की यह दशा देख कर क्लेश से पूरित हो संसार को मिथ्या और गृहस्थाश्रम को नरकधाम बता रहे थे। कहीं थका हुआ किसान अपना हल लादे हुए घर लौट रहा था। पक्षीगण भी मधुर स्वर करते हुए अपने घोंसलों की तरफ़ लौट रहे थे। ग्वाल गायों को ले धीरे २ घर की ओर लौट रहे थे। गायें और भैंसें दूध से भारी होने के कारण धीरे २ बड़ी शान से चल रही थीं और उनके गले के बंधे हुए टनटोकरियों का मधुर शब्द भला मालूम होता था। भला ऐसे समय में, जबकि संसार भर में कोलाहल मच रहा था, हमारे होस्टल में कब शान्ति रह सकती थी। कुछ विद्यार्थी टेनिस कोर्टों पर जमा हो रहे थे। कोई कपड़े पहिन कर बाज़ार या हवा खाने जा रहे थे। कोई खड़े २ अखबार ही पढ़ रहे थे। कोई धौंकल की आज की बीती हुई

बड़े चाव से सुन रहे थे। किसी की उससे अधिक मज़ाक करने के कारण खूब चों-चों हो रही थी। कोई लाली पी रहा था। कोई ठण्डाई घोट रहा था। कोई बादाम छील रहा था। कोई २ 'कबाड़ीमेड जेण्टलमेन' कबाड़ी से साहबों की उतरी उतराई चीज़ें ही खरीद रहा था। कुछ चापलूसों ने साहबों को सन्ध्या का भोजन कराने के लिये बुलाया था। वे उनके सामने प्रार्थी की अवस्था में खड़े २ पूछ रहे थे "हुजूर ! आप इस भोजन को पसंद करते हैं ?, कुछ और लाऊँ, हुजूर ! यह हिन्दुस्तानी चीज़ बहुत ही लज़ीज है"। उनकी चाल ढाल, रङ्ग ढङ्ग, तर्ज़ इत्यादि से और जिस प्रकार से वे ये बातें कर रहे थे उन सब से एक अजनबी भी शीघ्र यह मालूम कर सकता था कि वे केवल खुशामदी टट्टू हैं।

साधारणतः रात्रि को भोजन करके, कुछ समय तक गप्पकमेटी या हँसी मज़ाक हुआ करती थी, परन्तु आज बाहिर से एक अतिथि आये हुये थे। उन्होंने भोजन के पश्चात् यह प्रश्न किया—"क्यों भाई ! यहां तो तरह तरह की रक़में रहती होंगी। आपके यहां कितने क़िस्म के विद्यार्थी हैं ? सज्जनसिंह गम्भीरभाव से बोले—यहां विद्यार्थी ५ भागों में विभक्त हो सकते हैं।

(१) पहिले वे जो स्वतन्त्र विचार के होते हैं, अख़बार इत्यादि पढ़ते रहते हैं तथा स्वदेश प्रेम, परोपकार के कार्य्य, असहाय विद्यार्थियों की सहायता आदि में संलग्न रहने के साथ साथ सार्वजनिक सभाओं में, तर्कशालिनी सभाओं में भाग लेते हैं। इन सब गुणों के साथ साथ कालेज की पढ़ाई लिखाई में भी चतुर होते हैं, इन लोगों में खुशामद का माद्दा बिल्कुल नहीं होता।

(२) दूसरे वे होते हैं जिनमें लापरवाही का माद्दा अधिक होता है। जगत् में जो कुछ हो रहा है सो होने दो, हमें पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं। जगत् में योंही चढ़ाव उतार सदा से चला आता है। अपने आप समय आने पर हमारी दशा सुधर जायेगी। अभी हा हू न मचाओ। ऐसे विचारों से इनकी आदत काहिली और पुरुषार्थहीनता की होजाती है। वे किसी कार्य में दत्तचित्त होकर नहीं लगते। वे स्वतः कभी भी कार्य नहीं करते। पढ़ते जब ही हैं जबकि परीक्षा सिर पर आ सवार होती है या प्रोफेसर या प्रिन्सिपल की एक दो फटकार पड़ जाती है। ये सभा सोसाइटी में भी तब ही जाते हैं जब इनको कोई पकड़ कर ले जाता है। मोटे शब्दों में इनका यही हाल है, जैसा किसी कवि ने कहा है :—

"दुनियां में हाथ पैर हिलाना नहीं अच्छा।
धोती भी पहिनें जबकि कोई और पहिनादे।"

(३) तीसरे वे होते हैं जो कि कोट, बूट, टाई, पतलून और कोई कोई तो टोप भी पहिनते हैं। इन लोगों में पश्चिमी सभ्यता के सब अवगुण आगये हैं, पर गुण एक भी नहीं। ये लोग केवल टेनिस खेलने और विदेशी प्रोफेसरों की खुशामद में लगे रहते हैं। अपने कमरों में साहब लोगों को चाय पिलाते हैं और उनकी जूठी रकाबियां उठाते हुए नहीं सकुचाते। अपने क्लास वालों से इस प्रकार बातें करते हैं मानो वे सीधे ही इङ्गलिस्तान से चले आ रहे हैं। और अपनी मातृभाषा बोलने और लिखने में तो वे मानहानी समझते हैं। ये लोग अखबार बहुत कम पढ़ते हैं और कभी कभी पढ़ते हैं तो केवल 'पायोनियर'। इनके जीवन का उद्देश्य डिप्टी-

कलेक्टरी या तहसीलदारी प्राप्त करने का रहता है। और इसी लिये इन्हें टोपधारी से मिलते ही मानो स्वर्ग मिल जाता है। पहिली कक्षा के लड़के इन्हें "साहब" "flunky" "Syc-ophant" इत्यादि उपनामों से पुकारते हैं। पर हम इनके लिये 'सेकण्डहेण्ड जेण्टलमैन' का नाम अधिक उपयुक्त समझते हैं। वैसे तो सारी हिन्दू-जाति की ही दशा बड़ी विचित्र है। हम लोग प्रातःकाल विष्णुसहस्रनाम में "दासोऽहम्" "दासो-ऽहम्" का पाठ करते करते दास तो हो ही गये हैं। विशेषकर नवयुवकों की दशा हिन्दूगृहों में शोचनीय है। बाल्यावस्था में जब चाहें जब माता पिता विवाह कर देते हैं। फिर आश्चर्य यह है कि बड़े होने पर भी हम अपनी सम्मति माता पिताओं के सम्मुख प्रकट नहीं कर सकते, यदि करते हैं तो निर्लज्ज गिने जाते हैं। हम अपने बच्चों के विवाह, पढ़ाई, चिकित्सा इत्यादि में भी कुछ हस्तक्षेप नहीं कर सकते। फिर बताइये स्वत-न्त्रता तो शुरु से ही छीन ली जाती है। यहां कालेज में आकर हम कैसे निर्भय रह सकते हैं। यहां आर्य्यसमाजी गुरुकुल थोड़ा ही है जो सात वर्ष की अवस्था से ही इन सब झगड़ों से बरी हो जावें। ऐसे हिन्दू गृहों की भट्टी से तपाया हुआ तो प्रत्येक विद्यार्थी आता ही है। फिर ये तीसरी कक्षा वाले विद्यार्थी flunky क्यों कहलाते हैं? इसका कारण यह है कि ये लोग प्रायः बड़े २ ओहदेदारों के पुत्र होते हैं और जैसा अपने पिताओं को करते देखते हैं वैसा ही यहां आकर करने लगते हैं।

(४) चौथे वे विद्यार्थी होते हैं जो निर्बल, वीर्य्यहीन (cringing & subservient) दब्बू होते हैं। वे कूड़मग्ज़ भी होते हैं, परन्तु मन में पूरी जलन और ऐंठ रखते हैं। वे दूसरे

की वृद्धि को नहीं सह सकते और अपनी पढ़ाई की कमी को दूसरे उपायों से पूर्ण करते हैं, यानी प्रोफेसरों की खुशामद कर तथा नाना प्रकार के ऐसे कार्य्यों से जिनको कि एक गौरववाला विद्यार्थी कभी स्वप्न में भी नहीं सोच सकता, ये उनके कृपापात्र बन जाते हैं। इनका मुख्य उद्देश्य केवल सांसारिक डिप्टी कलेक्टरी या अच्छा सर्टीफिकेट पाना होता है। इनके आत्मा मानो होती ही नहीं। इनका हृदय सर्वथा उदारताशून्य होता है। ये लोग अक्सर ओछे कुलों के होते हैं। इनको अपने अधिकारों का ज्ञान ही नहीं होता। स्वतन्त्रता की कली जो कि मनुष्य के हृदय में स्वाभाविक होती है, वह इनकी बाल्यावस्था में ही मुरझा जाती है। ये प्राचीन आर्य्यों के गौरव को नहीं जानते। राम, युधिष्ठिर, विक्रम के इतिहास को केवल कहानीमात्र समझते हैं। इनको परतन्त्रता छोड़ने का ध्यान तक नहीं आता। जैसे बैल की गर्दन का मांस बराबर जुवों के लगने से गल जाता है और फिर उसको जूवा बुरा नहीं प्रतीत होता। इसी प्रकार खुशामद करते २ यह इतने आदी होजाते हैं कि इनको लज्जा ही नहीं आती। उलटे लड़कों में बैठकर इस बात की डींग हांका करते हैं। "हमने फलाने साहब बहादुर को अपने कमरे पर खाना खाने को बुलाया और जब साहब के बूट पर चाय फैल गई तो हमने अपने रूमाल से उनका बूट साफ कर दिया"।

(५) हमारे यहां कुछ विद्यार्थी ऐसे भी रहते हैं जिनको हम अमेरिकन टामबुल (American Tambull) कहते हैं। भाई, अमेरिकन टामबुल का क्या मतलब ? सज्जन ने उत्तर दिया–अमेरिका में जानवर मेशीनों से काटे जाते हैं। जानवरों को ज़बरदस्ती मेशीन पर चढ़ा कर काटने में बड़ी अड़-

चन होती है। आप जानते हैं अमेरिकावासी तो बड़े चतुर और नित्य नये आविष्कार करने वाले होते हैं। उन्होंने इसका उपाय भी सोचा। वे लोग जानवरों के कत्लगृहों (slaughter houses) में एक मोटा ताज़ा बैल पालने लगे और इसका नाम उन्होंने टाम रक्खा। यह टामबुल ऐसा सिखाया हुआ होता है कि दूसरे बैलों को लेकर मेशीन के चारों तरफ़ घूमता है। आप आगे २ स्वयं रहता है और दूसरे उसके पीछे पीछे। तुरन्त ही मौका पाकर वह अपने निर्दिष्ट स्थान पर पहुँच जाता है क्योंकि यह ऐसा सिखाया हुआ होता है और बाक़ी के सब जानवर मेशीन के नीचे एक एक कर कर अपने आप कटते चले जाते हैं। इसी प्रकार से पहिले तो ये लोग अगुआ बन जाते हैं, सारे लड़कों को भड़का देते हैं और फिर मौके के वक्त काम पड़ने पर अलग हट जाते हैं। ऐसी बातों से ये प्रिन्सिपल को जाकर यह विश्वास दिला देते हैं कि वे तो शान्तिप्रिय हैं और बाक़ी के सब लड़के लड़ाकू हैं। प्रिन्सिपल साहब काटने वाली मेशीन की तरह इन टामबुलों के बहकाने में आकर एक लड़के पर गुस्सा निकालते हैं। कोई कालेज से निकाला जाता है, तो दूसरा परीक्षा में ही फेल है, तो तीसरे पर जुर्माना होगया है, तो चौथा बिना अपराध होस्टल से ही निकाला जाता है, इत्यादि। प्रायः सिंह नामधारी ऐसे टामबुलों का काम किया करते हैं।

पञ्चम परिच्छेद ॥

अभी पूर्व की दिशा में कुछ कुछ लाली छाने लगी है, परन्तु सूर्योदय में अभी कुछ देर है। धीरे २ प्रभात की मधुर वायु बह रही है। प्रातःकाल की स्वच्छ सुखदायक वायु का सेवन केवल अहरी उठने वाले ही कर सकते हैं। हमारे चरित्रनायक सज्जनसिंह के अतिथि आज प्रातःकाल ४ बजे की गाड़ी से चले गये और ये उनको विदा कर वायुसेवन करने लगे, जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं। सज्जन समय के पूरे पाबन्द थे। ये और विद्यार्थियों के समान आलसी एवं कायर नहीं थे। और न किताबों के ही कीड़े थे। ये शारीरिक उन्नति को उतना ही आवश्यक समझते थे जितना कि खाना पीना। इनके चित्त पर लेटिन की कहावत "Mens sanaincorpore Sano" 'स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन' पूर्ण तया अंकित थी। इस कारण ये नित्यप्रति ४॥ बजे के समय कठोर से कठोर व्यायाम किया करते थे। ऐसे प्रातःकाल के समय में, जिसका हमने अभी वर्णन किया है, सज्जन लंगोट कसे हुए, नंगे बदन बोर्डिंग की छत पर मुगद्दर हिला रहे थे। बीच २ में दण्ड क़सरत भी करते जाते थे, वैसे तो विद्यार्थी ज़रा देर में उठा करते हैं, परन्तु आज जिस समय सज्जन अपने नित्यकर्म से निपट ही चुके थे, उसी समय सारे होस्टल में हलचल मच रहा था। सब ही के मुख पर यह बात थी "आज प्रातःकाल यूनिवर्सिटी इन्सपेक्टर्स होस्टल देखने आवेंगे। वार्डन साहब बहुत कम

होस्टल की सुध लेते थे। कभी शायद भूले चूके तीसरे चौथे महीने घूमने के तौर पर रात्रि को आ निकलते थे और एक दो लड़कों से गिटपिट कर रफूचक्कर होते थे। वे तो बेचारे लड़कों को पहिचानते तक न थे, परन्तु हां, लड़कों की छुट्टियां मंजूर करने में बड़े दक्ष थे। हिसाब किताब तथा मामूली बन्दोबस्त की बातों से तो उन्हें कुछ वास्ता ही नहीं था। सारा काम नीचे का मुंशी सुपरिण्टेण्डेण्ट करता था। बस, केवल हस्ताक्षर करने के १०)रु० रोज कमाते थे और सुंदर बंगले में चैन उड़ाते थे। परन्तु आज वार्डन साहब की विचित्र दशा है! बिचारे मुंशी की तो कुछ पूछो ही मत, मारे डर के उसे दस्त हो रहे हैं। यूनिवर्सिटी इन्सपेक्टर्स कहीं होस्टल की बुराई न लिखदें, इसीलिये आज सरगर्मी से काम हो रहा है। वार्डन, मानीटरों को बुला बुला कर समझा रहे हैं, देखो होस्टल के कमरे व पाखाने सब साफ रहें, सब विद्यार्थी कालेज के रंग के साफा बांधें। प्रिन्सिपल साहब भी बड़े घाघ थे। भला वे अपने कालेज होस्टल की कब बुराई सुनने लगे। बल्कि रात में ही कई रजिस्टर तैयार करा दिये, जिन में विद्यार्थियों के लिये नाना प्रकार के आर्डर लिखवा कर वार्डन के हस्ताक्षर करवा दिये। मक्खन भंगी जो नित्यप्रति पाखाने की दुर्गन्ध की रिपोर्ट करता करता थक गया था और जिसकी आज तक सुनाई नहीं हुई थी, उसकी भी आज सुनाई हुई। बिल्ली के भाग्य का आज छींका टूट पड़ा और भंगी को भी नई झाड़ू और फिनायल का पानी सफाई के लिये मिल गया। इतने दिन क्यों नहीं सुनाई हुई, इसका कारण सुनिये–सुपरिण्टेण्डेण्ट तो खुशामद और स्वार्थ में लवलीन थे। उन्हें क्या पड़ी कि लड़के सुखी हैं या दुखी। वे तो सिर्फ बचत

बता कर अपनी तनख्वाह बढ़वाने की फ़िक्र में थे। बेचारे माता पिता तो अपने ज़िगर के टुकड़ों को इसलिये घर से भेजें कि वार्डन सुपरिण्टेण्डेण्ट उनका पितृवत् पालन पोषण करें। और वहां यह जुल्म! यह मिजाज़! यह बेपरवाही! यह हकूमत! और ग़रूर!, अस्तु, यहां इन होस्टलों का जापान की जातीय शिक्षा से मिलान कर अपने ज़िगर के छाले मत फोड़ो। परन्तु जातीय शिक्षा का मूल्य जापान वालों से सीखो। जैसे तैसे कालेज वालों ने यूनिवर्सिटी-इन्सपेक्टरों की आंखों में धूल झोंक कर यह लिखवा लिया -"होस्टलों का प्रबन्ध अति-प्रशंसनीय है" विचारे यूनिवर्सिटी वालों को क्या मालूम कि विद्यार्थी किस प्रकार रहते हैं और वार्डन अपने कर्त्तव्य पूरी तरह पालन करते हैं या नहीं। भला उन्हें क्या मालूम कि रोगी बालकों की सेवा का इनको कभी ध्यान भी नहीं आता, केवल सिविलसर्जन को बहुत कुछ कहने सुनने पर चिट्ठी लिखना ही एकमात्र धर्म समझते हैं। कभी आकर पूछते भी नहीं कि लड़के किस तरह से हैं। इनका व्यवहार मित्रवत् नहीं होता वरन् मालिक नौकर जैसा होता है। खैर, यह तो ऐसा करें सो करें ही, परन्तु शोक इस बात का है कि जातीय बोर्डिंगों में भी स्वाधीनता का अंकुर जमने नहीं पाता, परस्पर प्रीति नहीं। जातीय बोर्डिंगों के एक सुपरिण्टेण्डेण्ट अपने को बोर्डिंगों का चक्रवर्ती राजा मानते थे। वे सदा सुपरिण्टेण्डेण्टी के नशे में चूर रहते थे और लड़कों के क्लेशों की ओर व अपने कर्त्तव्यों की ओर बहुत कम ध्यान देते थे। पर आज यूनिवर्सिटी इन्सपेक्शन से तो इनकी भी बुद्धि हवा थी। बोर्डिंग का बाग़ जो सदा दुर्गन्धयुक्त रहता था, इन्सपेक्टरों के दिखाने के लिये स्वच्छ करवा दिया गया। एक लोक-

मान्य बूढ़े बाबा यूनिवर्सिटी वालों को सब जाति के वकील बन कर समझाने आये। उनके आदर सत्कार से ही यूनिवर्सिटी वाले प्रसन्न होकर, कानों से ही सारे बोर्डिंग को देखकर प्रशंसा लिख गये। खैर, यह तो संसार की गति ही है कि मनुष्य असलियत को कम पहुँचते हैं और बाहरी दिखावटी आडम्बरों से धोखा खाकर अपनी सम्मति निर्धारित कर लेते हैं। 'प्रत्येक चमकने वाली वस्तु सोना नहीं होती', इसके रहस्य को समझने वाले तो बिरले ही हैं।

षष्ठ परिच्छेद

फरवरी, मार्च और अप्रेल विद्यार्थियों के लिये घोर दुख के महीने होते हैं। वसन्त ऋतु की शोभा, जिसको वर्णन करते २ कवि थक गये हैं, जोकि ऋतुराज कहा है, विद्यार्थियों के लिये क्लेश ऋतु हो जाती है। "वसन्ते भ्रमणं पथ्यम्" वाली शिक्षा को विद्यार्थी ताक में ऊंचे रख देते हैं। इस समय के मानसिक दुःख को वही अनुभव कर सक्ता है जिसको कि दुर्भाग्य से कभी यूनिवर्सिटी-परीक्षा देने का अवसर मिला है। उस समय विद्यार्थियों को न खाने की ही सुधि है न पहिनने की ही सुधि है। न यह मज़ाक ही है न वह कोलाहल ही है। सब जगह होस्टल भर में शान्ति का राज्य है। लड़के अपनी अपनी पढ़ाई में दत्तचित्त हैं। वे इतना अधिक परिश्रम करते हैं कि आंखें उल्लू के समान गड़ जाती हैं और सुन्दर मुख मुर्झा कर पीला पड़ जाता है। भला ऐसा नहीं होगा तो होगा ही क्या। वर्ष भर की पढ़ाई को ३ महीनों में समाप्त करना चाहते हैं। और शेष वर्ष भर गुलछर्रे उड़ाते हैं। यदि इन दिनों में कहीं से भूला भटका किसी के यहां अतिथि आगया तो मानो उस पर सौ घड़े पानी के गिर गये। बिचारे, तकल्लुफ के मारे कुछ कह तो सक्ते नहीं, पर मन ही मन यह सोचा करते हैं कि कब यह जावे और कब पाप कटे। परीक्षा के निकट दिनों में जब कि तैयारियों की (Preparation leave)

छुट्टियाँ होजाती हैं, छात्रों को नींद तक नहीं आती। दिन में १२ घण्टे तो बहुत से पढ़ते हैं, पर कोई २ तो जागकर रात्रि-देवी को ही शर्मा देता है। परीक्षा के दिनों में यदि किसी विद्यार्थी की मानसिक वृत्तियां देखी जांय तो दया से हृदय आर्द्र हुए बिना नहीं रह सक्ता। रात्रि दिवस, सोते जागते बैठते उठते परीक्षा का ही भूत सवार रहता है। कभी बात होती है तो इसी विषय में। परीक्षा लेने वाले कौन २ महाशय हैं ?, अमुक (Examiner) परीक्षक कैसा है ?, वह कैसे पर्चे देता है, अमुक कठिन परीक्षापत्र देता है, अमुक बदमाश है, बहुत थोड़े नम्बर देता है, अमुक किताब याद ही नहीं होती। क़ानून वालों को सातवां ज्युरिसप्रुडैन्स वाला पर्चा लड़कों के लिये हव्वा है। बी. ए. के विद्यार्थियों को Scope and Method of Economic समझ में ही नहीं आता। इधर हिस्ट्री वाले रट रट के पागल ही हुये जाते हैं इत्यादि बातें होती रहती हैं। ये लोग दिन रात पढ़ते पढ़ते आदमी क्या चिराग़ हो जाते हैं। सब शरीर पञ्जर हो जाता है और केवल शिर शिर ही काम करता है। ऐसे समय में कोई नाई आके कहे " वाह, बाबूजी आप इतने से शिर के काम में ही दुबले हो गये। देखो मैं कैसा हट्टाकट्टा हूँ। दिन रात शिर का काम करता हूँ और मेरी इतनी उमर इसी काम में बीत गई है। तो शायद परीक्षा देने वाला विद्यार्थी या तो लज्जित हो जावे या उससे लड़ मरे और सौ रुपये देने पर भी न माने। बिचारे विद्यार्थी सेनाटोजन, काडलिवर आइल, हफसले का नरवाइन टानिक इत्यादि (बल-वर्द्धक दवाइयां) पी पी कर अपने पञ्जर दुर्बल शरीर को केवल हिलने चलने योग्य रख सक्ते हैं। परीक्षा के कुछ दिवस पूर्व बोर्डिंग हाउस, होस्टल, अड़ोस पड़ोस के पार्क और

उद्यानों में अपूर्व दृश्य रहता है। कोई उद्यान के इस कोने पर कोई बेञ्च पर बैठा हुआ, कोई झाड़ी के नीचे, कोई पेड़ के नीचे अपनी २ किताबों के घोटे लगा रहे हैं। होस्टल में भी विद्यार्थी कमरों के किवाड़ बन्द कर कर खूब ही रटते हैं। रात्रि भर होस्टल में दिवाली रहती है। कोई १२ बजे सोकर उठता है और बाक़ी रात पढ़ता है। कोई १२ बजे तक पढ़ कर सो जाता है। कोई ४ बजे प्रातःकाल उठकर पढ़ता है।

हा! परीक्षा विचारे निर्धन भारतीय विद्यार्थियों के लिये एक भयानक वस्तु है। जैसे तैसे पास होना चाहिये नहीं तो पेट का सवाल, मान प्रतिष्ठा का प्रश्न, अपने मित्रों और कुटुम्बियों को नाराज़ करना इत्यादि हज़ारों प्रश्न सामने भूत बन कर नित्य खड़े रहते हैं। इसी प्रकार रात भर होस्टल में जागृति रहती है और केवल वर्ष के इन्हीं तीन महीनों में विचारे चौकीदारों को रात में सोना मिलता है क्योंकि पढ्ढू रट्टू विद्यार्थी ही काफी चौकीदारी कर लेते हैं। इतना पढ़ने पर भी आश्चर्य यह है कि कोई भी विद्यार्थी यह नहीं कहता कि हम पढ़ते हैं। ईश्वर कीकृपा हुईतो पासहो जायेंगे। जिससे पूछिये यही उत्तर मिलता है—"भाई कुछ नहीं पढ़ा ईश्वर ही वेली है"। बहुत से विद्यार्थी जो अक्सर प्रथम डिवीजन में पास होते हैं, यह कहते सुने गये हैं—"भाई मैं शपथ खाता हूँ मैंने एक शब्द भी नहीं पढ़ा है। किताबों का दोहराना तो दूर रहा।" गज़ट देखिये तो नाम पहिले दर्जे में रक्खा है। यह विद्यार्थियों में मिथ्याजीवन क्यों? इसके तीन कारण हो सकते हैं।

(१) या तो वे फेल होने की बदनामी से इतने डरते हैं कि पहिले से ही अपने मित्रों, कुटुम्बियों को इस बुरे समाचार के लिये तैयार करते हैं ताकि उनको अधिक दुःख न हो।

क्योंकि जब वे फेल होने का समाचार सुनेंगे तो कहेंगे 'भाई उसने तो पढ़ा ही नहीं था, पास होता कहाँ से'।

(२) दूसरे वे जो होते तो हैं साधारण विद्यार्थी, परन्तु दुनियाँ को यह बतलाना चाहते हैं। कि "हम (Genius) हैं। (पाठक उन लोगों को कहीं भूत न समझ बैठें। इनका मत-लब अपने आपको तीव्रबुद्धि बतलाने का होता है) हमारी स्मरणशक्ति बहुत ही अच्छी है।" विद्यार्थी देखते हैं "हमारे दोनों हाथ लडडू हैं। यदि फेल हो गये तो किसी को अचंभा न होगा, क्योंकि हम पहिले से ही कहते थे। यदि हम पास हो गये तो हमारे विद्याबल का प्रभाव लोगों पर जम ही जायगा"।

(३) तीसरे वे होते हैं जिनको कि विदेशी भाषा पढ़ने में अत्यन्त कष्ट होता है और खूब पढ़ लेने पर भी इनको यह विश्वास नहीं होता कि हम पास हो ही जायँगे। परीक्षा के पर्चे आने के पहिले तो कहते हैं "Much depends upou the nature of the papers we gat" भाई, पर्चों पर बहुत कुछ निर्भर है और उनका यह कहना भी सत्य है। पर्चे करने के बाद यह कहा करते हैं, "नहीं मालूम परीक्षक को हमारे जवाब पसंद आवें या न आवें भाई! यह विश्वविद्यालय तो पर्दानशीन है; यदि फेल हो गये तो योरूपीय यूनिवर्सिटियों की तरह यहाँ पर्चे फिर से थोड़े ही देखे जायँगे।" इनका कहना भी सत्य ही है क्योंकि मेट्रिक्यूलेशन के नतीजे में १०० में से ३७ पास होते हैं। कापियाँ बड़ी बेपरवाही के साथ देखी जाती हैं। कई लड़के तो विचारे कापियों के टोटल पूरी तरह से नहीं जुड़ने के कारण फेल हो जाते हैं। कई महात्मा परीक्षक ऐसे होते हैं कि यदि कापियां खो जावें तो उनके अन्दाज से ही नम्बर धर देते हैं। एक समय एक प्रथम डिवीजन में आने

वाला विद्यार्थी इसी चक्कर में आकर फेल हो गया। उसके शिक्षकों ने बहुत लिखा पढ़ी की, परन्तु यूनिवर्सिटी वाले तो कानों में तैल डाल सो रहे। एक, एक परीक्षक एक ही कक्षा का परीक्षक नहीं होता। रुपया कमाने के लिये वह ही एन्ट्रेन्स का, वह ही एफ. ए. का, वही बी. ए. का और वह ही एक ही आदमी एम. ए. का भी परीक्षक होता है। बताइये, जिस आदमी को ६ सप्ताह में हज़ारों कापियाँ देखनी हों, वह कहांतक विद्यार्थियों की कापियों को पूर्णतया न्याय से देख सकता है? वह तो बस कापियाँ उठाईं, देखी और फेंकीं। बस खराब हस्ताक्षर वाला लड़का क़त्ल। यदि परीक्षा की कापियों की दुबारा जांच की प्रथा हो जावे, जैसा कि दूसरे विश्वविद्यालयों में होता है, तो कभी भी अन्याय न हो और न होने का किसी को डर ही रहे। एक साहबबहादुर ने, जिनको विलायत जाने की जल्दी थी, १५ दिवस में ही २६०० कापियां देखकर फेंकदीं। बस आपही विचार लीजिये कैसे देखी होंगी?

अब आपको विद्यार्थियों के इतने पढ़ने पर भी यह कहना कि "हम कुछ नहीं पढ़ते" इसके कारण ज्ञात होगये होंगे। हां, विद्यार्थियों का इस समय पठन में दत्तचित्त होना उदाहरणीय है। वह प्रातःकाल का ४ बजे का समय जब ऋषि मुनि और गुरुकुलों के ब्रह्मचारी सन्ध्या, अग्निहोत्र से निवृत्त हो वेदाध्ययन करते थे। वह वेदाध्ययन का समय जिसका वर्णन कविवर कालिदासजी ने अपने रघुवंश के द्वितीय सर्ग के अन्त में किया है, उस अच्छी घड़ी में आज ताज़ीरात हिन्द के डेफिनेशन ट्रस्ट एक्ट के ट्रस्टीज़ के फर्ज़ या ट्रान्सफर आव प्रापर्टी के सेक्शन घोटे जा रहे हैं। बिचारे मेडिकल स्टूडेन्ट हड्डियों के नाम घोटते २ ही सूखे जा रहे हैं। बी०ए० वालों को

हिस्ट्री रटते रटते नाक में दम है। सम्पत्तिशास्त्र वाले विद्यार्थी मारशल के नोट ही बिना समझे शुक के समान घोटरहे हैं। वह चार बजे का मनोहर समय जबकि चर अचर जगत् में शान्ति का राज्य रहता है, ऐसे समय में चांदनी रात कैसी मनोहर प्रतीत होती है। उस मन्द मन्द ज्योति को फेंकते हुए निर्मल चन्द्रमा की श्वेत रश्मियों का आनन्द तो बस पेड़ ही लूटते हैं। बिचारे विद्यार्थियों को तो रटने के आगे अवकाश कहां, जो इस प्रकृति की शोभा को देख सकें। वह मीठी मीठी नींद जिसका आनन्द पक्षी इस समय में अपने घोंसलों में सपरिवार सोये हुए उड़ाते हैं, वह भला विद्यार्थियों को कहां सुलभ है?, उलटे विद्यार्थी इस समय प्राकृतिक शोभा के आनंद लूटने वालों का डाह करते हैं। जब कभी ऐसी मनोहर चांदनी रात में कोई इक्के वाला चांदनी का आनन्द लूटता हुआ और अपनी बेसुरी छोड़ता हुआ ठंडी शीतल सड़कों से निकल जाता है तो एक विद्यार्थी आह भर कर दूसरे से कहता है—"भाई यह आनन्द क्यों न उड़ावें। इसे बी० ए० या एल-एल० बी० की परीक्षा थोड़े ही देनी है, अस्तु।

संसार का चक्र यों ही चलता रहता है। सुख के पश्चात् दुःख और दुःख के पश्चात् सुख सदा लगे ही रहते हैं। अन्त में परीक्षायें आईं और समाप्त भी ह गईं।

सप्तम परिच्छेद

आज परीक्षा समाप्त हुई है। आज विद्यार्थियों के आह्लाद का ठिकाना लगाना ज़रा कठिन काम है। जिनके पर्चे बिगड़ गये हैं वे यद्यपि उदासमुख हैं तथापि आशा उनका पीछा नहीं छोड़ती और वे कम से कम इस बात का तो आनन्द कर रहे हैं कि उनको अपने घरवालों के शीघ्र ही दर्शन होंगे और दो तथा तीन महीने के वास्ते उन के शिर से मनों बोझ उतर गया। कुछ विद्यार्थी तो बनारस, लखनऊ, कानपुर, कलकत्ता इत्यादि स्थानों में सैर करने चले गये, परन्तु अधिकांश तो घर जाने के उत्सुक थे। उनको घर जाने की इतनी जल्दी पड़ी हुई थी कि इधर १० बजे परीक्षा समाप्त हुई और उधर १२ बजे की पंजाब मेल से घर को प्रस्थान किया। परीक्षा समाप्त होते ही इनको गुरुकुल के विद्यार्थियों या यूरूप के विद्यार्थियों के सामान एल्पस या हिमालय आदि पहाड़ों में भ्रमण करने और प्रकृति का आनंद लूटने का ध्यान नहीं आता। किसी तरह सरस्वती यात्रा की चिन्ता नहीं होती। बिचारों को परीक्षा का श्रम उतारते उतारते १५ तथा २० दिवस व्यतीत हो जाते हैं। फिर कहीं जीव में जीव आता है, परन्तु फिर परवश हो जाते हैं। १५ दिवस १२ घण्टे नित्य सोने से इनकी प्रवृत्ति सोने की ही पड़जाती है। दिन रात सोने में ही बीतता है। यदि कभी कुछ पढ़ा तो दैनिक समाचारपत्र पढ़ लिया। महान् पुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ना, प्रातःकाल व्यायाम करना, भारतभूमि के पहाड़ी स्थानों की सैर करना इत्यादि अनेक कार्य इनको नहीं सूझते। उलटे विषय भोग में फंस जाते हैं। बहुत से विद्यार्थी यह प्रण करके जाते हैं "अब की गर्मी की

छुट्टियों में यह करेंगे, और वह करेंगे, देशहित का अमुक काम करेंगे। हिन्दू-विश्वविद्यालय के लिये खूब चन्दा इकट्ठा करेंगे। मातृभाषा की उन्नति के लिये यों लेख लिखेंगे इत्यादि"। पर घर जाकर ये नाना प्रकार की लहरें महासागर में गोता खा जाती हैं या यों कहिये कि सांभरझील में गिर कर नमक हो जाती हैं या यह भाव निद्रादेवी के साथ विवाह कर लेते हैं और केवल निद्रादेवी का ही राज्य हो जाता है। बस, देशहित के नाम गुलछर्रें। 'चाहे पूर्व जाओ चाहे पश्चिम, वही कर्म के लच्छन' वाली कहावत के अनुसार, इन विद्यार्थियों की ही क्या, सारी भारतीय यूनिवर्सिटियों के विद्यार्थियों की, प्रायः यही दशा है। हां, परिणाम आने के सप्ताह भर पहिले तो परिणाम के लिये विद्यार्थियों के पेट में चूहे कूदने लगते हैं। इससे मिले, उधर नैनीताल तार दे, शिमला चिट्ठी दे, दोस्तों से, सम्बन्धियों से, बस सबसे परिणाम ही परिणाम की वार्त्तालाप होती है। सबही "लीडर" के लिये स्टेशन जा, डाकखाने जा, सीपी के समान मुंह फाड़े अपने हृदय में वर्षा के बिन्दुरूपी परिणाम को धारण करना चाहते हैं। जहां ज़रा समाचारपत्र ने परिणाम छापने में देरी की और एक आध के तार आ गये तो बस फिर तारवालों के गहरे हैं। बात की बात में तार वालों की आमदनी बढ़ जाती है, इसमें विद्यार्थियों का आना जाना और तार देना प्रारंभ हो जाता है। यह सब तारों का वृथा खर्च भी हम विश्वविद्यालय वालों के शिर ही मढ़ेंगे, क्योंकि यदि ये परिणाम की तारीख दूसरे विश्वविद्यालयों के समान पहिले से ही नियत कर दिया करें तो यह वृथा खर्च क्यों हो? हमारे चरित्र-नायक सज्जनसिंह को एक घटना होजाने के कारण उपर्युक्त परीक्षा देने का कष्ट तथा परीक्षा के फल की दुविधा न उठानी पड़ी।

अष्टम परिच्छेद

रात्रि के आठ बजे होंगे कि सब विद्यार्थी खा पीकर निश्चिन्त हुए। कुछ तो अपने कमरों में आराम कर रहे थे और कुछ यूनिवर्सिटी इन्सपेक्शन और परीक्षा के बारे में बातें कर रहे थे। इतने में ही एक चपरासी आया और कमरे में एक कागज़ दिखलाता फिरता था। सब लड़के उस कागज़ को पढ़ २ कर नाक भों चढ़ा रहे थे। आप उत्सुक होंगे कि उस कागज़ में ऐसी क्या बातें लिखी हुई थीं?, लीजिये सुनिये। उसमें लिखा था कि बोर्डिंग की फीस दुगुनी बढ़ाई गई है। आगामी महीने से तुमको ४) रुपये मासिक देना पड़ेगा नहीं तो बोर्डिंग खाली करना होगा। कोई भी त्यौहार तुम हमारी बिना इजाज़त नहीं मना सक्ते। तुम हमारी बिना आज्ञा नित्यप्रति का हवन भी नहीं कर सक्ते (बड़ा हवन करना तो दूर रहा)। दिवाली पर जो तुमने रोशनी की, उसके लिये हमारी आज्ञा उल्लंघन के लिये प्रत्येक पर एक रुपया जुर्माना किया गया है। बस फिर क्या था पढ़ते ही विद्यार्थी आग होगये। कुछ लड़के तो प्रोफेसरों के असत्-व्यवहार से पहिले से ही नाराज़ थे। प्रिन्सिपल, गोरे (विदेशी) विद्यार्थियों को विशेष कृपा से देखते थे और उनको मिस्टर कह कर पुकारते थे। लड़कों की आंखों में यह बात भी खटकती थी। उनको यूनिवर्सिटी इन्स्पेक्शन से अपने दुःखों के निवारण की बहुत कुछ आशा थी। पर अब तो वह भी न रही और इस नये हुक्म ने तो घाव पर नमक छिड़क

दिया। आग में घी का काम दिया। बिचारे माता पिता न मालूम कैसे पेट पर पट्टी बांध बांध कर तो रुपया भेजते थे। तिस पर भी इस प्रकार नित्य नये टैक्स देना विद्यार्थियों को अखरता था। दूसरे लड़के अपनी धार्मिक स्वतन्त्रता खोना पसन्द नहीं करते थे, वे कहते थे कि धार्मिक स्वतन्त्रता बृटिश सरकार तक ने हमको दी है। हमें हमारे त्योहार मनाने में आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं। बस इन दुःखों से संतप्त विद्यार्थियों में स्ट्राइक, स्ट्राइक की हवा चल पड़ी। सब अपने अपने इष्ट धर्म की सौगन्ध खा रहे थे कि हम बिना धार्मिक स्वतन्त्रता पाये कभी भी कालेज पढ़ने नहीं जायंगे। परन्तु इस समय डिप्टी कलेक्टरी चाहने वाले विद्यार्थी मन ही मन कांप रहे थे। इनकी इतनी हिम्मत तो कहां थी कि इस स्ट्राइक के प्रवाह के वेग को रोक दें, परन्तु हां अपनी डिप्टी कलेक्टरी का स्वार्थ न बता कर छिप छिपकर कुछ लड़कों को यह बहका रहे थे, देखो परीक्षा में जाना है। साहब अवश्य अप्रसन्न हो जायंगे और तुम्हारी आयु खराब हो जायगी। "घर का भेदी लंका दाही" वाली कहावत के अनुसार ये लोग अपनी ख़ैरख्वाही बताने के लिये दिन के ६॥ बजे ही बोर्डिंग से सटक गये और प्रिन्सिपल साहिब के बंगले पर जा उन्हें सब बातें सुनाने लगे और अपनी ख़ैरख़्वाही बघारने लगे। हा! स्वार्थ बुरी बला है। जिसका आप स्वप्न में भी न ख़याल करें, वही स्वार्थवश आपका बुरा कर रहा है। स्वार्थ चाहे जैसे नाच नचाता है। जिस देश, जिस जाति और जिस मनुष्य में स्वार्थ की मात्रा बढ़ती जाती है वही रसातल को पहुँचते हैं। वे अंधे हो जाते हैं। धर्म कर्म का उन्हें कुछ ज्ञान नहीं रहता। पश्चिम वालों में तो केवल रंग का ही स्वार्थ है।

परन्तु हमारे यहां तो व्यक्ति-स्वार्थ है, जो इस आर्य्यभूमि को चक्की में पीस कर चकनाचूर कर रहा है। बस इसी व्यक्ति-स्वार्थ में हमारे एक हिंदुस्तानी प्रोफेसर आ फँसे। इनको लोग विद्यार्थियों का बड़ा ही शुभाकांक्षी समझते थे। ये लंबी सफेद डाढ़ी रखते थे। लोगों को क्या मालूम था कि यहां मक्कारी छिपी है। अच्छे अच्छे विद्वान् प्रोफेसरों की पेट की बात ये अपनी लच्छेदार बातों द्वारा निकलवा लेते थे। यह कह कर सारा भेद खुलवा लिया करते थे, "क्यों साहब आपने तो हमसे बहुत ही छिपाया, पर हमें तो सब बात मालूम हो ही गई?" ये सवाल कर दुनियां भर की बातें जमा कर लेते थे। और फिर प्रिन्सिपल से जा जड़ते थे। यह स्ट्राइक का मौका इन्होंने अपनी स्वार्थसिद्धि के लिये अच्छा पाया। प्रिन्सिपल की आँखें इस स्ट्राइक के समाचार को सुन खुल गई थीं और वह मन ही मन नाना प्रकार के संकल्प विकल्पों में पड़ रहा था। शायद इस समय लड़कों के दुःखनिवारण करने के उपाय सोच रहा था, परन्तु इसी समय लम्बी सफेद डाढ़ी का स्वार्थ भी ज़ोर मार रहा था। कभी तो वह सोचता था, यदि यह स्ट्राइक मटियामेट करा दूं तो मेरे पुत्र को या भाञ्जे को अच्छी जगह साहबबहादुर नौकरी दिलवा देंगे और कभी वह सोचता था कि मुझे २५) रु० तरक्की मिल जायगी। सुतराम् उन्होंने डाढ़ी हिलाते हुए प्रिन्सिपल साहिब को अभिवादन किया और स्ट्राइक के बारे में साहिब से बातें करने लगे। बातें करते समय कई बार डाढ़ी हिलाई गई, शिर खुजाया गया। अन्त में लम्बी सफेद डाढ़ी प्रिन्सिपल से बोली—"आप घबरावें नहीं, आप विद्यार्थियों पर पूरी सख्ती रक्खें। इनके होश एक दिन में ठिकाने आ जायंगे। इनको एक भी अधिकार मत दो,

क्योंकि इससे कालेज का प्रबन्ध (discipline) ख़राब होता है। जो ज़रा तेज़ तर्रार होवे उसे ही आप कालेज से निकाल दें"। हिन्दुस्थानी प्रोफेसर के मुख से ये बातें सुनकर प्रिन्सिपल का हौसला बढ़गया। खुशामदी लड़कों ने भी झुक कर अभिवादन किया और कहा—"हां हुजूर! देखो हम अभी लड़कों में फूट का बीज बोते हैं, परन्तु कृपा कर आप हमारे साथी लड़कों के साथ खूब सख़्ती का व्यवहार करें नहीं तो वे लोग हमारी हँसी उड़ावेंगे।"

यदि आप उनके कथनानुसार बर्ताव करेंगे तो हमारी विशेषता ही क्या रहेगी? प्रिन्सिपल मन में तो उन जाति के शत्रुओं से घृणा करता था, परन्तु उसे तो अपना काम निकालना था. इस वास्ते ऊपरी मन से बोला—"अच्छा जल्दी लड़कों को कालेज में पढ़ने को लाओ। हम तुम्हारा इस वर्ष नामिनेशन अवश्य कर देंगे। लंबी सफेद डाढ़ी वाले प्रोफेसर ने जासूस का कार्य्य अच्छा किया। जब उसने देखा कि लड़के समझाने, बुझाने, डराने, धमकाने पर भी कालेज जाने को उद्यत नहीं तो उसने एक चाल चली। छली कपटी तो था ही। एक होस्टल में जाकर कहा—"तुम क्यों निश्चिन्त बैठे हो, १५ वीं कोठी वाले तो कालेज चले गये। प्रिन्सिपल ने कृपा कर मेरे कहने सुनने से एक घंटे का समय और दिया है। जिसमें तुम कालेज पहुँच जाओ"। १५ वीं कोठी में जाकर उनको और ही चकमा दिया। जाटों को कहा—बनिये चले गये हैं तुम क्यों नहीं जाते। मुसलमानों को कहा—हिन्दू चले गये हैं तुम अपने शिर आपही कुल्हाड़ी मार रहे हो? ब्राह्मणों को कहा—भार्गव चले गये हैं, तुम अपने जातिभाइयों का अनुकरण क्यों नहीं करते? विद्यार्थी, जिनका हृदय अति-

शीघ्र विश्वास कर लेने वाला होता है, बिना कुछ सन्देह किये ही, बूढ़े बाबा की बातों में आगये और परिणाम यह हुआ कि स्ट्राइक सब निष्फल हुआ। कुछ लड़के कालेज से निकाल दिये गये क्योंकि वे तनिक निर्भय और स्वतंत्र विचार वाले थे। और अधिक स्वतन्त्रता के लिये भी हां, ना में कुछ उत्तर न मिला। हा ! नहीं मालूम कितनी बार भारत ऐसी चालबाज़ियों में आया है, परन्तु हमारे विद्यार्थी तो उस समय अपने ऐतिहासिक ज्ञान को सब भूल भाल गये। यदि कुछ लड़कों को आत्म-विश्वास होता और कपटियों के कपट में न आकर वे स्वयं ही होस्टलों में जाकर सब मामला तय कर लेते तो बूढ़े बाबा की सारी मक्कारी निकल जाती। ढोल की पोल खुल जाती। और धार्मिक स्वतन्त्रता भी अवश्य मिलती। और लड़कों की धाक प्रिन्सिपल पर जमती सो तो जमती ही, परन्तु विदेशियों की आंखें खुल जातीं कि भारतवासी संगठन कर सक्ते हैं और जब ये मिल कर काम करेंगे तब मनोवाञ्छित फल प्राप्त करेंगे। हमारे सज्जनसिंह, सुशीलचन्द्र ने भी इस धार्मिक स्वतन्त्रता के युद्ध में मुख्य भाग लिया था। रात्रि को वे होस्टल में विद्यार्थियों को उनके अधिकार समझाते बुझाते फिर रहे थे। हा हा ! सज्जनसिंह, रात्रि के दो बजे, जब सारा चर अचर जगत् निश्चल रहता है और मनुष्य मीठी नींद में टांगें पसारे पड़े रहते हैं, होस्टल के विद्यार्थियों में जीवनसंचार कर रहा था। भला ऐसे शेरदिल को प्रिन्सिपल कालेज में कैसे रख सक्ते थे ? शोक ! वे और उनके ४ दोस्त, जिन्होंने धार्मिक स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये प्राणपन से यत्न किया था, कालेज से इस स्ट्राइक के सिलसिले में निकाल दिये गये। सज्जन बड़े सहनशील और तीव्रबुद्धि होने केका-

रण सर्वप्रिय थे। उनके इन गुणों की प्रोफेसर भी प्रशंसा करते थे। बोर्डिंग में सज्जन ही सज्जन की दशा पर शोक प्रकट किया जा रहा है। कोई भोले भाले भाई, जिनको कालेज के प्रिन्सिपल का खानसामा वाला सर्टिफिकेट ही संसार भर में अमूल्य जान पड़ता है, बहुत दुःख प्रकट कररहे हैं और कह रहे हैं—"हाय! सज्जन के आनंद का दीपक गुल हो गया। उसका सुख प्रिन्सिपल के अकृपारूपी बादलों से छिप गया। उसके विद्यार्थी जीवनरूपी नाटक का अन्तिम पर्दा गिर गया। अब उनका जीवन खराब हो गया।" देशभक्त विद्यार्थियों के चित्त की दशा विचित्र है पर एक चना कैसे भाड़ को फोड़ सकता है? सज्जन अपने ४ मित्रों सहित धार्मिक स्वतन्त्रता के लिये बलिदान हुआ था। इस स्ट्राइक में उसका कोई स्वार्थ नहीं था। सारे विद्यार्थी केवल जिह्वा से ही शोक प्रकट कर रहे थे, परन्तु किसी की हिम्मत नहीं पड़ती थी कि प्रिन्सिपल को अपने प्रिय भाई को कालेज से न निकालने को कहता। सज्जन उनके लिये कालेज से निकला पर उसके सहपाठियों में इतनी हिम्मत नहीं कि उसका साथ देते। हाय! भारत की इस अकृतज्ञता, पुरुषार्थहीनता को कहते हृदय विदीर्ण होता है, मस्तक में चक्कर आता है और लेखनी रुकती है। क्या योरुप के विद्यार्थी ऐसी दशा में अपने भाई का कालेज से निकाला जाना चुपचाप सहन करते?, प्रथम तो योरुप के विद्यार्थी हड़ताल से अपने पूरे हक़ ही लेते और यदि विशेष कारणों से हड़ताल तोड़ते तो भी अपनी हड़ताल के अगुओं (रिंगलीडर्स) का निकाला जाना प्राण रहते रहते कभी भी सहन न करते। प्रिय विद्यार्थीगण! पश्चिम के देशों से स्वावलम्बन और आत्मगौरव सीखो। यह व्यक्तिगत

स्वार्थरूपी भूत भारत माता की कोमल छाती पर सवार होकर पैने नखों से भारत माता की आंतों को निकाल फेंक रहा है, इसलिये इसे छोड़ो।

अस्तु ! ये सब बातें पिछड़ी हुई जाति में होती ही रहती हैं, परन्तु कर्त्तव्य को पालने वाला मनुष्य निरुत्साही नहीं होता। जैसे ज्यों २ चन्दन घिसा जाता है त्यों-त्यों वह अधिक सुगन्धि देता है। ज्यों-ज्यों सोना तपाया जाता है त्यों-त्यों उज्ज्वल होता है। इसी प्रकार कर्त्तव्यपरायण मनुष्य कभी दुःखित नहीं होते, किन्तु उल्टा उनका साहस अधिक बढ़ता है। उनकी हार ही विजेताओं की विजय से अधिक प्रशंसनीय होती है। हमारे चरित्रनायक सज्जनसिंह स्ट्राइक की निष्फलता पर और अपने निकाले जाने पर हतोत्साहित न हुए। उनका मुख कर्त्तव्य-पालन की ज्योति से देदीप्यमान होरहा था। उनके चेहरे पर घबराहट बिल्कुल भी नहीं थी। उनका कहना था कि इस निष्फल स्ट्राइक से भी हमारा कार्य्य सिद्ध होगया। अब कभी एकाएक प्रिन्सिपल वा वार्डन की हिम्मत धार्मिक स्वतन्त्रता में बाधा डालने की नहीं होगी। और उनका कहना सत्य निकला। प्रिन्सिपल के हृदय में उन दिव्यमूर्तियों का जो कि कालेज से स्ट्राइक के सम्बन्ध में निकाले गये थे, डर बैठ गया। दिन रात प्रिन्सिपल को उनके ही भूत दीखते थे। क्योंकि उसने कभी २ लड़कों को केवल सत्य पर लड़ने के कारण हानि पहुँचाई थी। इससे वह रात दिन भयभीत रहते २ बीमार होगया। और अन्त में ६ मास की छुट्टी लेकर विलायत चला गया, परन्तु विलायत की शीत वायु भी भारतवर्ष की गर्मीसे गर्म हुये उसके दिमाग को ठीक न कर सकी। वह वहां रोगग्रस्त होने पर भी भारतीय विद्यार्थियों के विरुद्ध लेख लिखता रहा। परन्तु उसके

लेखों का भारत पर कुछ भी असर न हुआ, प्रत्युत भारत दिन प्रतिदिन उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त होता ही गया और प्रिन्सिपल साहब हाथ मलते ही रहगये। और अन्त में रोगवृद्धि के कारण उनको अपना पंजर शरीर १७०० बी.सी. की १५जून को त्यागना पड़ा। बिचारे खुशामदी लड़के डिप्टी कलेक्टरी के लिये ताकते ही रह गये। स्ट्राइक को मटियामेट करने वाला वह लंबी डाढ़ी वाला बूढ़ा प्रोफेसर, बहुमूत्ररोग से पीड़ित हो धीरे २ पीला पड़ने लगा और कुछदिनों के पश्चात् वह बिचारे लड़कों के पढ़ाने के योग्य न रहे। वे अपनी इच्छा के प्रतिकूल रिटायर होने को बाधित किये गये। बिचारों ने अपने देशभाइयों का गला बुढ़ापे में सुख पाने की लालसा से काटा था और उसका फल इनको यह मिला कि बिना पेंशन पाये ही या कुछ ग्रेच्यूटी मिले ही कालेज से निकाले गये। चाहिये तो प्रिन्सिपल को यह था कि उसकी वृद्धावस्था में उसके गत वर्षों की खैरख्वाही का विचार रख उसको पेंशन देता। परन्तु नये प्रिन्सिपल ने उसको कुछ न माना। जब तक बैल ने काम दिया तब तक तो उसे चलाये गये और दाना पानी दिया, परन्तु ज्योंही बूढ़ा हुआ त्यों ही कसाई को बेचकर रुपये वसूल किये। इसी प्रकार इस विद्यार्थीद्रोही प्रोफेसर की दशा हुई। ऐसे समय में यह लंबी डाढ़ी (Wolsey) के समान शोकाकुल हो यह कहते हुए रिटायर हुये-"यदि ऐसी भक्ति, जैसी कि मैंने इस कालेज के प्रिन्सिपल की की है, मैं अपनी मातृभूमि की करता तो आज का लज्जाजनक दिन मुझे न देखना पड़ता" पाप का फल अवश्य मिलता है, जैसे बोया वैसे काटा, यह परमात्मा का अटल नियम है। अपनी अपनी करनी सब पाते हैं। इसी-लिये इन उपर्युक्त दोनों मनुष्यों की यह हालत हुई। हमारे

चरित्रनायक सज्जनसिंह ने सोचा काम लायक अंग्रेज़ी विद्या का ज्ञान तो होही गया है, फिर बी० ए० की डिगरी लेकर ३५) या ४०) रु० में कहां भटकते फिरोगे? कालेज से निकाले गये सो अच्छा ही हुआ, इसलिये इन्होंने अपने देश की अधोगति पर तरस खाकर अपनी माता के कष्ट निवारणार्थ विदेश को जाने का निश्चय किया। एक दो धनिक महाशयों ने पांचों को होनहार युवक जान स्कालरशिप देदी। सज्जन तो व्यापारिक विद्याध्ययन करने फ्रान्स चले गये। और उनके चार मित्रों में से एक सुशीलचन्द्र तो जर्मनी केमिस्ट का काम सीखने गये। दूसरे रायसिंह कृषि-विभाग तथा खनिज पदार्थों का ज्ञान प्राप्त करने अमेरिका गये। तीसरे धोंकलसिंह, जो विना अपराध वैसे ही स्ट्राइक की लपेट में आकर निकाले गये थे, रंग का काम सीखने जर्मनी गये और चौथे हरनारायण स्टील तथा मेशीनरी बनाने का काम सीखने इंगलेण्ड गये। हमारे चरित्रनायक सज्जनसिंह को विदेश जाने के पूर्व निराशा के भूत से लड़ना पड़ा, इस का वर्णन हम नवमें परिच्छेद में करेंगे॥

नवम परिच्छेद

संध्या का समय है, दो स्त्री पुरुष घोड़ों पर सवार हुए एक दुर्गम जंगल में भ्रमण कर रहे हैं। वहां वे कई वन, उपवन पर्वत, गुफायें, नद, नदी, सरोवर और आश्रम इत्यादि को देखकर ईश्वर की महिमा वर्णन करते जाते हैं। कहीं नाना प्रकार के पक्षी कलरव करते हुए अपने २ घोंसलों की ओर उड़ रहे हैं। कहीं सिंह, बाघ आदि की गर्जना सुनाई देती है और कहीं झरने झर रहे हैं। यह सब दृश्य देखकर उनके हृदय में आनन्द होता है, परन्तु साथ ही प्राचीन भारतवर्ष की याद आजाती है और सारे ऋषि मुनियों और यज्ञभूमियों का पवित्र चित्र सामने खिंच जाता है किन्तु जब वे अपनी मातृभूमि की वर्तमान अधोगति को सन्मुख रखते हैं तो शोक से व्याकुल हो जाते हैं। वह स्त्री अतीव सुन्दर और सुडौल महिला है और श्वेत वस्त्र धारण किये साक्षात् पवित्रता की मूर्ति प्रतीत होती है। वह पुरुष एक शिक्षित नवयुवक है। उसके लंबे चौड़े कद से, गठीले शरीर से और अस्त्र शस्त्रों से वह सच्चा क्षत्रिय प्रतीत होता है। उस देवी का नाम सत्यवती है और पुरुष का नाम हमारे चरित्रनायक "सज्जनसिंह" है। दोनों ने अपने जीवन का मुख्य उद्देश्य संसारोद्धार करने का कर रक्खा है। उन्होंने संसार के उपकार के लिये अंधविश्वास के भूत, बगुला-भक्ति, मिथ्यादेवी, अकृतज्ञता, अन्ध परम्परा और जादूटोना इत्यादि को संसार से बहुत कुछ निकाल फेंका है। धर्म के

नाम पर भोले पुरुषों से द्रव्य लूटनेवाले राक्षसों, अराजकता, अविद्यान्धकार, घमण्ड, अप्रसन्नता, जंगलीपन और विषयभोग इत्यादि को अपनी बुद्धि, तर्कशक्ति, सत्य धर्म, बल, बहादुरी और दिलेरी से नाश कर दिया है। इतने पर भी, वे उपर्युक्त भूतों को नाना प्रकार के दुःख सहन कर, बड़े २ युद्धों में हरा- कर चुपचाप नहीं बैठे हैं, किन्तु रात्रि दिन संसार के उपकार का ध्यान इनके सन्मुख है। वह अभी थोड़ी ही दूर गये होंगे कि एक भयानक आंधी आई और काले २ बादलों ने गगन- मंडल को आच्छादित कर दिया। इतने में उन्होंने एक हथियार- बंद सवार को अपने घोड़े को दुड़की चाल से दौड़ाते देखा, वह ऐसा मालूम होता था मानो किसी शत्रु के डर से भागा है या कोई दूसरी भयानक चीज़ उसे डरा रही है। ज्यों २ वह भागता जाता था पीछे फिर कर देखता जाता था, मानो कोई भयभीत करने वाली वस्तु उसका पीछा कर रही है। ज्योंही वह निकट आया उन्होंने उसके बिखरे हुए बाल देखे, उसका चेहरा पीला पड़ा हुआ था, शरीर में काटो तो खून नहीं, उसके अंगो में मानो जीवन ही नहीं, उसके गले में एक सन का रस्सा पड़ा हुआ था, जो कि बहादुर सिपाही के नाम को कलंक लगाने वाला था। सज्जनसिंह ने अपने घोड़े को तेजी से बढ़ाया और कहा—"कौनसा मनुष्य ऐसा भयभीत होकर क्यों जा रहा है?" उसने बड़ी कठिनता से उस भागते हुए सवार को रोका और यह प्रश्न किया—"महाशय कहिये किसने आपको ऐसा भयभीत किया है, आप किसके भय से ऐसी तेजी से भाग रहे हैं, मैंने कभी भी दिलेर सिपाही को ऐसे भागते नहीं देखा है", परन्तु उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया और अधिक भयभीत होगया और अपनी पथरीली आंखों से घूरता हुआ थर २

कांपता हुआ अचंभित हो ठहर गया। मानो कि उसने नर्क की राक्षसनियों को देख लिया है। उससे बार बार सज्जनसिंह प्रश्न करता था, पर वह केवल कांपता था और अन्त में कठिनता से हकलाते हुए ये शब्द उस के मुख से निकले— "परमात्मा के लिये मुझे न ठहराइये, देखो २ वह मेरे पीछे चला आ रहा है" इतना कह कर वह भागने वाला ही था कि सज्जनसिंह ने उसे बलात् ठहरा लिया। वह भागने वाला सवार बोला—"क्या मैं यहां उस पुरुष से, जो कि अभी मुझ से आत्म-हत्या करवा लेता, भयरहित हूँ ?, क्या अब मेरी मृत्यु टलगई है, सो मैं आपको अपनी कहानी सुना दूँ"। सज्जनसिंह ने कहा —"डरो मत, यहां कोई भय नहीं है"। उस भगोड़े सवार ने उत्तर दिया—तो मैं आपको उस दुःखदायक कथा को सुनाता हूँ जो कि मैंने अभी अपनी आंखों से देखी है और यदि विवेक से काम न लेता तो मेरी भी उसमें आहुति हो जाती।

मैं थोड़ी देर पहिले एक दिलेर सवार से मिला जिसका कि नाम "तारासिंह" था, वह बड़ा वीर था उसने कई लड़ाइयों में जय प्राप्त की थी। वह एक युवती से प्रेम करता था, परन्तु वह युवती उसके प्रेम का कभी उत्तर नहीं देती थी और इसलिये वह दिन २ शोक और संताप से निर्बल होता जाता था। वह घूमता घूमता मुझे मार्ग में मिल गया और कुछ देर बाद ही हम दोनों को पथ में एक मनुष्य मिला, जिसका नाम "निराशसिंह" था। राम रे राम! उसका नाम लेते हृदय कांपता है। परमेश्वर ऐसे मनुष्यों से बचावे, उस निराशसिंह ने हमको नमस्ते किया और सामाजिक समाचार और संसार की गति पर वार्त्तालाप प्रारम्भ किया। वह झाड़ी में छिपे सर्प के समान हमारे निकट आता गया और हमारी दशा और

दिलेरी के कामों पर प्रश्न करने लगा। जब उसने हमारा सारा वृत्तान्त जान लिया और यह मालूम कर लिया कि हमारा कोमल चित्त प्रेम में कृतकार्य्य न होने के कारण शोकपूरित है, तब उसने सारी आशा, जो हमारे चित्त में वर्तमान थी, छीन ली। और तत्पश्चात् हमको चित्तहीन, असहाय पाकर आत्महत्या करने के लिये ललचाने लगा और कहने लगा कि संसार के सारे झगड़े और दुःख मृत्यु से ही मिट सकते हैं और झट से मुझे तो एक रस्सा फांसी खाने के लिये दिया और मेरे साथी को एक चाकू दिया। मेरा साथी तो उस चाकू को पाकर ही जीवन से हाथ धो बैठा, परन्तु मैं अधिक डरपोक या यों कहिये अधिक भाग्यशाली होने के कारण उस भयानक दृश्य को देखकर भय से अधमरा होकर भागा। ऐ सज्जन! यदि आप भी किसी के प्रेम में लिप्त हैं तो निश्चय ही वह दुःख आपको उठाना पड़ेगा। परमेश्वर करे आप कभी भी उस निराशसिंह की जादूवाली वाणी को न सुनें।

सज्जनसिंह ने कहा—यह हमारी समझ में नहीं आता कि किस तरह से मनुष्य केवल शब्दमात्र से ही अपना प्राणहनन कर लेते हैं। सवार ने जवाब दिया—सज्जन! मेरा अभी का अनुभव मुझे बताता है कि किस तरह से शहद टपकाती हुई वाणी दिल और रग-रग पिघला देती है और पहिले इसके कि मनुष्य होश में आता है, यह उसको सर्वथा निर्बल बना देती है। सज्जन! उसके धोखे में आप कभी भी न आवें। सज्जनसिंह ने यह श्रवण कर आज कल के नवयुवकों की तरह चुप्पी नहीं साधी, किन्तु प्रण किया "निश्चय ही मैं आज से तब तक विश्राम नहीं करूंगा जब तक कि मैं उस दुष्ट निराशसिंह की चालाकी और धोखेबाज़ी स्वयं न निरीक्षण

करलूं" और सवार से कहा—"मैं आपसे विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि आप मुझे उसके घर तक ले चलें। सवार ने उत्तर दिया—मैं केवल आपके लिये अपनी इच्छा के प्रतिकूल उस दुष्ट के गृह तक ले चलता हूँ। आप मुझे चाहे जितनी धन सम्पत्ति दें तोभी मैं उस दुष्ट निराशसिंह के गृह के सन्मुख नहीं ठहरूंगा क्योंकि मैं निराशा के भूत के देखने की अपेक्षा मरना अच्छा समझता हूं। थोड़ी ही देर में वे उस स्थान पर आगये, जहां वह दुष्ट निराशसिंह रहता था। वह एक अंधेरी पथरीली गुफ़ा में रहता था, उस जगह मरे हुए आदमियों के मांस की बदबू आती थी और उस गुफ़ा पर उल्लू बैठा हुआ भयानक शब्द उच्चारण कर रहा था। उस स्थान के वृक्षों में न तो पत्ते, फूल इत्यादि ही लगे हुए थे और न फल। केवल वृक्षों के डंठल पथरीली चट्टानों पर पसरे हुए दृष्टिगोचर होते थे। उन डंठलों पर सैकड़ों आदमी फांसी खा खा कर मर चुके थे और उनकी लाशें नीचे पड़ी २ सड़ रही थीं, वहां पहुँच कर वह नंगे शिर वाला सवार भागना ही चाहता था कि सज्जनसिंह ने उसे जबरदस्ती ठहरा लिया और उसको धैर्य दिया, वे उस अंधेरी गुफा में घुसे जहां कि उन्होंने उस दुष्ट निराशसिंह को भूमि पर नीची गर्दन किये बैठे देखा। वह अपने सुस्त मन में शोक से पूरित हुआ कुछ सोच रहा था, उसके कंधों पर बिखरे हुए लंबे २ बालों ने उसके मुख को ढांप दिया था और उनमें से उसकी गड़ी हुई आंखें और बैठे हुए जबाड़े और गाल दिखाई देते थे, उसके मुख पर मांस नाममात्र को नहीं था, मानो उसे कई दिनों से भोजन नहीं मिला है। उसके कपड़े बिलकुल फटे चिथड़े थे। उसके सामने ही एक लाश पड़ी हुई थी जिसके पेट में चाकू

घुसा हुवा था और ताज़ा २ खून बह रहा था। यह उसी तारासिंह की लाश थी, जिसका हम ऊपर वर्णन कर आये हैं।

यह दृश्य देख कर सज्जनसिंह की आंखें क्रोध से लाल होगईं और उसने एक दिलेर सिपाही का जीवन नाश करने का बदला लेने का दृढ़ संकल्प कर उस दुष्ट को इस प्रकार ललकारा—"ऐ दुष्ट तू ने इस प्राणी का जीव लिया है, इसलिये तुझे ही न्यायानुकूल अपने खून से इस खून का बदला चुकाना पड़ेगा"। निराशसिंह बोला—ऐ बेवकूफ़, मूर्ख तुझे यह क्या पागलपन सूझा है" सो ऐसा कड़ा हुक्म देता है, न्याय केवल यह कहता है कि वह ही मनुष्य मरे जो जीवित रहने के योग्य न हो। यह मनुष्य केवल अपनी दूषित आत्मा के कारण मृत्यु को प्राप्त हुआ है। इसको किसी दूसरे ने मरने को उद्यत नहीं किया। क्या प्रत्येक को अपना हक़ देना पाप है ?, क्या हम उस मनुष्य को न मरने दें जो कि इस संसार में एक पल भी जीवित नहीं रहना चाहता ?, क्या उस मनुष्य को कीचड़ से निकालना और नदी से पार करना हमारा धर्म नहीं जो कि कीचड़ में फंस गया है और नदी के बहाव में बहा चला जाता है ?, हमें प्रत्येक पथिक को उसके आदर्श तक पहुँचाने में सहायता देना चाहिये। तू बड़ा ही द्वेषी पुरुष है जो अपने पड़ोसी की भलाई में दुःखित होता है। तू मूर्ख है जो अपने दुःखों को ही सुख समझ कर चैन करता है। यदि तू अपने आपको नदी के बहाव से नहीं बचाता तो दूसरे को क्यों नहीं बचाने देता ? इस तारासिंह ने आत्महत्या करने से अतीव आनन्द उठाया है। वह अब उस अनन्त शान्ति को और सुख को प्राप्त हुआ है, जिसकी कि तू इच्छा करता है, परन्तु नित्य प्रति उस मार्ग से दूर हटता जाता है। यदि थोड़े से दुःख

से हमको अनन्त शान्ति और सुख मिलजावे तो दुःख से डरना नहीं चाहिये। परिश्रम के बाद नींद, तूफान के बाद बन्दरगाह, लड़ाई के बाद आराम, जीवन के पश्चात् मृत्यु सदा सर्वदा आनन्दप्रद होती है।

निराशसिंह के उपर्युक्त वचनों को सुनकर सज्जनसिंह असमञ्जस में पड़ गये और बोले—जीवन का समय नियमित है, मनुष्य इसको न तो बढ़ा सकता है और न घटा सकता है, सिपाही को अपनी जगह तब तक कभी न छोड़नी चाहिये जब तक कि कप्तान आज्ञा न दे।

निराशसिंह ने उत्तर दिया—जिसने सिपाही को नियुक्त किया है वह ही प्रातःकाल बिगुल बजाकर उसको जगह छोड़ने का हुक्म देता है। जो कुछ वस्तुएँ संसार में हैं और जो कुछ काम होते हैं क्या वे परब्रह्म परमेश्वर के नहीं?, क्या उसने सब वस्तुओं को फिर नाश होने के लिये नहीं बनाया? जो कुछ प्रारम्भ हुआ है सब का नाश होगा। उन सब का समय परमेश्वर ने नियत कर दिया है। फिर कौन उस मौत को जोकि भाग्य में बदी है रोक सक्ता है? ज़ब मृत्यु का समय आगया तो किसी को भी नहीं पूछना चाहिये कि यह कहां से आई?, क्यों आई?, मैं जानता हूँ जितना अधिक जीवन होगा उतना ही अधिक पाप होगा और जितना अधिक पाप होगा उतना ही अधिक दण्ड मिलेगा। वह तमाम भयानक युद्ध जिनमें तूने विजय प्राप्त की है और जिनके लिये तू इतना मान करता है, तेरे दुःख के कारण हैं और तू उन के लिये पछतावेगा, क्योंकि जीवन ही का बदला जीवन और खून का बदला खून मिलेगा। क्या इतना जीवन भोगना काफ़ी नहीं है? जिस पुरुष ने

पहिले सच्चा मार्ग छोड़ दिया वह ज्यों २ आगे बढ़ेगा त्यों त्यों ही भटकेगा और रास्ता सर्वथा भूल जायगा, इसलिये तुम आगे न बढ़ो, न भटको, किन्तु यहां पर प्राणान्त करलो। इस जीवन में सैकड़ों दुःख हैं, जैसे "भय, बीमारी, बुढ़ापा, कुटुम्बियों का बिछुड़ना, नुकसान होजाना, परिश्रम, मज़दूरी करना, लड़ाई झगड़ा करना, शारीरिक दुःख, भूख, सर्दी, गर्मी और नाना प्रकार की पराधीनता इत्यादि"। ऐ दुखी पुरुष! तुझे मरने की बहुत अधिक आवश्यकता है, यदि तू ज्ञानतुला में अपनी सच्ची दशा को तोले तो तेरे तुल्य कोई अधम मनुष्य नहीं है। तू अपने पिछले जीवन को याद कर, तुझे कैसे २ दुःख भोगने पड़े ?, ऐ पापी! तू क्यों अब अधिक जीवन चाहता है ?, क्या तेरे पाप इतने अधिक नहीं हो गये हैं जिनसे परमात्मा तुझ से अतीव क्रुद्ध है ? क्या परमात्मा न्यायकारी नहीं है ?, वह तेरे घट २ की बातों को जानता है। क्या वह परमेश्वर का क़ानून नहीं है कि प्रत्येक पापी नाश को प्राप्त हो और सर्व देहधारी भी नाश को प्राप्त होंगे, इसलिये क्या करना चाहिये, क्या यह ठीक नहीं है कि पहिले ही मर जावें बजाय इसके कि जीवित रह कर जीवन के और भी दुःखों को उठावें ?, मृत्यु से सब शोक दूर होजाते हैं। इसलिये हे देवपुत्र सज्जनसिंह! जल्दी आत्महनन करो। सज्जनसिंह यह बातें सुनकर बहुत विचलित हुआ। ये बातें तलवार की नोक के समान उसके हृदय पर चुभीं। इस मिथ्या मार्ग पर लेजाने वाले निराशसिंह के मिथ्या तर्क ने एकाएक सज्जनसिंह को निराशा के वशीभूत कर दिया। उसकी सारी दिलेरी जाती रही और वह बेहोश होगया और कांपने लगा। जब कि दुष्टनिराशसिंह ने उसकी यह

दशा देखी तो वह नाना प्रकार से उसको हतोत्साहित करने लगा। वह उसको भयानक २ दृश्य दिखाने लगा। उसके पापों को द्विगुणित रूप में दण्डित बताने लगा और फिर उसके पास आत्महत्या के लिये तलवार, चाकू, रस्सी, ज़हर, अग्नि इत्यादि लाया और उससे कहा—जिस तरह से चाहो उस तरह से प्राण-पखेरू उड़ालो क्योंकि जिस पुरुष ने परमात्मा के क्रोध को भड़काया है, वह मरने योग्य है. परन्तु जब सज्जनसिंह ने एक भी हथियार उनमें से न लिये तो वह घर से एक तेज़ छुरा लाया और यह उसके हाथ में दिया। सज्जनसिंह के हाथ कांपने लगे, परन्तु अन्त में उसने पक्का इरादा कर लिया और हाथ को उठाकर पेट में छुरा घुसाने ही वाला था कि चट से सत्यवती देवी ने उसका हाथ पकड़ लिया और छुरा छीनकर भूमि पर फेंक दिया।

सत्यवती के नेत्र क्रोध से रक्त हो गये थे, उसका सुन्दर चन्द्रमुख क्रोध से लाल होगया था और उसके होठ और अंग २ फड़क रहे थे। अस्तु ! जैसे तैसे अपने को सम्हाल कर क्रोध-पूरित यह वचन बोली—धिक्कार है ! धिक्कार ! तुझे, ऐ सज्जन-सिंह ! क्या तू ऐसी ही लड़ाई से संसार में विजय प्राप्त करेगा? क्या तू ऐसी ही निराशा के वशीभूत होकर संसार में शान्ति फैला-वेगा ? और वैदिक धर्म का प्रचार करेगा ?, ऐ दुर्बल चित्तवाले ! इधर आ, ऐसी कपोल-कल्पित बातों में मत फँस, ऐसे मिथ्या तर्क से अपने संसारोद्धार के व्रत को भंग मत होने दे। हा ! न जाने तेरे जैसे कितने इस पुण्यभूमि के युवा और युवतियां ऐसी झूंठी दलीलों में फँस कर अपने दुर्लभ मनुष्यजीवन को खो बैठते हैं। रे कायर ! परमात्मा न्यायकारी है। उसकी आज्ञा पालते हुए १०० वर्ष तक जीने की इच्छा कर। इतने में

सत्यवती का क्रोध कुछ कम हुआ। उसको अपने परमप्रिय को इस प्रकार के कठिन शब्द कहने पर कुछ पश्चात्ताप हुआ और वह इसको समझाती हुई मधुर स्वर से इस प्रकार कहन लगी—

सत्यवती देवी—हे प्यारे! संसार में सुख और दुःख उसी प्रकार साथ हैं जैसे धूप के साथ छाया, गुलाब में कांटे। कभी २ कुछ ऐसा समय आता है कि अच्छे पुरुष भी संसार से दुःखित हो जंगल की शरण लेते हैं, परन्तु याद रखिये और पक्का विश्वास रखिये कि जिस पुरुष ने अपना कर्तव्य-पालन बहुत कुछ किया है, वह फिर निराशसिंह के धोखे में आता है ?, यह संसार दर्पण के समान है। यदि आप हँसते हैं तो वह भी हँसता है। यदि आप क्रुद्ध होते हैं तो वह भी क्रुद्ध होता है। यदि इसको आप लाल कांच से देखते हैं तो सब लाल ही लाल दृष्टिगोचर होता है। यदि आप आस्मानी कांच से देखते हैं तो सब वस्तुएँ आस्मानी नज़र आती हैं। यदि किसी धुंधले शीशे से देखते हैं तो सब चींज़ें मैली कुचैली दृष्टिगोचर होती हैं। एक कवि ने सत्य कहा है—"My mind to me my Kingdom is" मेरा मन ही मेरा राज्य है। इसलिये सदा वस्तुओं के गुण ग्रहण करो। सदा प्रत्येक वस्तुओं की भलाई और लाभ को देखो। संसार में कोई भी वस्तु ऐसी नहीं जो कुछ न कुछ उपकार की न हो; आप सदा प्रसन्नवदन रहें। संसार में कोई भी वस्तु इतना सुख नहीं दे सकती जितना कि कर्तव्य-पालन से मिलता है। वे मनुष्य मूर्ख हैं जो कि प्रकृति और परमात्मा को संसार के दुःखों के लिये दूषित किया करते हैं, मिल्टन ने भी कहा है–"Accuse not nature, she has done her part, do thou but thine."

प्रकृति को दोष मत दो। उसने अपना कर्तव्य पूरा कर लिया। तू अपना कर्तव्य पूर्ण कर। हमको निराशसिंह के समान (Pessimist) निराशा के सिद्धान्त को मानने वाला नहीं होना चाहिये। हमको सदा आशापूर्ण रहना चाहिये। यदि संसार में मनुष्य दुखी हैं तो यह उन्हीं के कर्मों का फल है। यदि मनुष्य धर्मानुसार कर्म करता जाय तो अवश्य अपने जीवन को सफल और सुखी बना सकता है। मनु भगवान् ने वेद, स्मृति, सदाचार और अपनी आत्मा के अनुकूल कर्म करने में धर्म बताया है। कुछ पाप तो आजकल हम जानते बूझते करते हैं और कुछ दुष्टों के बहकाने में आकर या और दूसरे प्रभावों के कारण करते हैं। और यही सब दुखों की जड़ है। निराशसिंह भाग्य पर भरोसा करने वाला मनुष्य है। वह कहता है—जो कुछ होना है सो होगा। वह मनुष्य को दूसरी बलवान् शक्तियों के हस्त में खिलौना मानता है, परन्तु मैं आपको कहती हूँ, हे परम प्रिय सज्जनसिंह! मनुष्य मर्द है, वह स्वयं अपनी क़िस्मत का स्वामी है। जो मनुष्य अपनी क़िस्मत का स्वामी नहीं तो इसमें दोष उसी का है। मनुष्य चाहे जैसे अपने जीवन को बना सकता है। वह चाहे रावण जैसे अपना नाश कर सकता है या मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र के समान अपने को पवित्र और उज्वल बना सकता है। यदि हम सच्चे मन से प्रतिज्ञा करें और पुरुषार्थ करें तो अवश्य ही जो कुछ हम होना चाहते हैं, वही हो सकते हैं। आप अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहें। आप अवश्य संसारोद्धार में कृतकार्य होंगे। जब हम अपनी किस्मत के स्वामी हैं तो प्रश्न उठता है, हमको हमारे जीवन को किस तरह से काम में लाना चाहिये? हमको हमारे जीवन का मुख्य उद्देश्य क्या रखना चाहिये?

क्या 'खाना, पीना, मौज उड़ाना' हमारे जीवन का उद्देश्य है ?, प्यारे यह तो जंगली जानवर पशु, पक्षी भी करते हैं । एक केवल धर्म है, जिससे हम मनुष्य संसार के मुकुटमणि गिने जाते हैं। प्लेटो, अरिस्टाटल, बुद्ध, शंकर, दयानन्द, अपने स्वार्थ में संतुष्ट न रहे, किन्तु परोपकार में तत्पर हुए, क्योंकि "परोपकाराय सतां विभूतयः"। लार्ड बेकन ने कहा है— "No man's private fortune can be an end in any way worthy of his existence" केवल अपने लिये धन कमाना यदि किसी का उद्देश्य है तो वह संसार में रहने योग्य नहीं, इसलिये प्रत्येक का उद्देश्य परोपकार है । आप तो विद्वान् हैं, आपने पहिले से ही अपना उद्देश्य संसारोद्धार रक्खा है, मिथ्यावादी निराशसिंह आपसे कहता है कि "जितना अधिक जीना उतना ही अधिक पाप करना है" मानो जीवन वृथा ही है। आप सोचिये जीवन में कितने काम करने हैं, एक कवि ने सत्य कहा है—"Art is long and time is fleeting" जीवन में इतने अधिक काम करने हैं कि हमको कहना पड़ता है कि कार्यक्षेत्र बहुत अधिक है और समय बहुत थोड़ा है। हमने इतना कम काम किया है कि हमको न्यूटन के समान कहना पड़ता है—"We are put children playing on the sea-shor and gathering here and there a prettier shell or a more delicate sea-weed than usual, while the great ocean of truth lies all undiscovered before us", हम केवल बालकों के समान समुद्र के किनारे पर खेल रहे हैं, कभी २ हमको सुन्दर सीपी या साधारण से अधिक कोमल समुद्री घास मिल जाती है, परन्तु सत्य का महान् अथाह समुद्र हमारे सन्मुख बेपता पड़ा

हुआ है। एक भी वस्तु ऐसी नहीं जिसके सारे के सारे फ़ायदे हमको मालूम हों। यद्यपि स्टीम, मशीनें, बिजली (Electricity) वायुयान इत्यादि मालूम कर लिये गये हैं तथापि ये कितने कम काम में लाये जाते हैं। सैकड़ों नदियां योंही फिजूल समुद्र में पानी बहाकर डाल देती हैं। हम कोई यंत्र निकाल कर इन सब नदियों के पानी को काम में ला सकते हैं और भारतवर्ष से दुर्भिक्ष भगा सकते हैं। सैकड़ों जातियां आपस में लड़कर धन और मनुष्यों का वृथा नाश कर रही हैं। क्या हम अपने तेज और प्रभाव से शांति और एकता नहीं फैला सक्ते?, केवल भारतवर्ष में ही कितना काम पड़ा है, कितने अधिक अशिक्षित हैं। धर्मशिक्षा कितने कम मनुष्यों को मिलती है, विद्यादान का सब से अच्छा तरीक़ा कौनसा है?, किस प्रकार से हमारी समाजिक स्थिति को सुधारें?, किस प्रकार स्त्रीजाति पर समाज के अत्याचार को हटावें?, किस प्रकार बालविवाह इत्यादि कुरीतियों को भारत से जड़ से उखेड़ कर फेंक दे? किस प्रकार विधवाओं के आर्त्तनाद से विदीर्ण भारत-भूमि के जर्जर हृदय को, बेचारी अबलाओं के दुःख दूर कर कर शांत करें?, किस प्रकार भारत के घर घर में प्राचीन वर्णाश्रम-मर्य्यादा को पुनर्जीवित करें?, प्यारे! सैकड़ों ऐसे काम पड़े हैं जिनके गिनाने से कागज़ के कागज़ रंग जावें। क्या भारतवर्ष के ५२ लाख साधुओं को सुधारना और सन्मार्ग पर लाना कुछ छोटा काम है?, इसलिये हे सुहृद्! संसार में जीना हमारा धर्म है, भगवान् ने ईशोपनिषद् में आज्ञा दी है—

कुर्वन्नेवेह कर्म्माणि जिजीविशेच्छतꣳसमाः।
एवं त्वयि नान्यथेतोऽस्ति न कर्म्म लिप्यते नरे॥

"काम करते हुए १०० वर्ष पर्यन्त जीने की इच्छा करो। इसी प्रकार से तुम कर्म्मों में लिप्त नहीं होंगे, दूसरे प्रकार से नहीं"। अपने आपको संसार से अलग रखना, किसी बात में दखल न देना, यह तो दुर्बल प्रमादी, सुस्त मनुष्य भी कर सक्ता है। धर्म इतना महान् है कि इस छोटे से निष्कर्म के दायरे में नहीं आसक्ता। परमात्मा ने मनुष्य को अद्भुत बल और बुद्धि दी है। यह ईश्वरदत्त विवेकशक्ति ही बताती है कि मनुष्य के आदर्श उच्च हैं, स्वार्थपरता और पुरुषार्थहीन होना नहीं। मनुष्य में प्रकृति से ही चुलबुलापन, जोश, बल और बुद्धि है, यह सब उसको सदा कार्य्य को करने की स्वभावतः प्रेरणा करते हैं। यह सदा उसको अपनी और समाज की शारीरिक, मानसिक और आत्मिक उन्नति के लिये उद्यत करते हैं। पुरुषार्थ, न कि काहिली प्रकृति का नियम है। संसार के चर और अचर जीव और वस्तुएं पुरुषार्थ से पूर्ण दृष्टिगोचर होती हैं। कोई भी वस्तु निकम्मी प्रतीत नहीं होती। चीटीं तक भी सदा अपने कार्य्य में मग्न रहती है। वह पृथ्वी, जिस पर हम निवास करते हैं, सदा सर्वदा घूमती रहती है। पौधे और वृक्ष सदा अपनी वृद्धि की चेष्टा करते रहते हैं, वायु सदा चलती रहती है, जल सदा बहता रहता है। कृपा कर आप अपने चारों ओर देखें, देखिये प्रकृति आपको क्या शिक्षा देती है ?। आम का वृक्ष किस निःस्वार्थभाव से अपनी युवावस्था में मीठे २ आम संसार को खिलाता है, बुढ़ापे में थके पथिकों को छाया देकर विश्राम देता है और मरकर भी अपनी सूखी लकड़ियों को हवन की समिधा में देकर गगन-मण्डल में सुगन्धि फैलाता हुआ परोपकार करता है। प्यारे काम करो, पुरुषार्थ करो, उन्नति करो,

परोपकार करो, यही प्रकृति का उपदेश है। इन वचनों और उपदेशों को सुनकर सज्जनसिंह की आत्मा फड़क उठती है और वह बैठा हो जाता है। सत्यवती उसे सहारा देकर फिर इस प्रकार कहती है:—वह मनुष्य, जो अपना कर्त्तव्य-पालन करता हुआ पुरुषार्थ करता है, सदा आनन्द में रहता है, जो सुस्ती और क़ाहिली में पड़ा रहता है वह सेठों के समान तोंद फुलाकर बीमारियों का घर बन जाता है। यह संसार सुख की खान है, जिसमें केवल खान खोदने वाले की आवश्यक्ता है। अहा! मनुष्य को परमात्मा ने कैसी २ शक्तियां दी हैं। हम अपनी वाणी से मधुर कोकिल शब्द उच्चारण कर किस प्रकार संतप्त हृदय की वेदना दूर कर देते हैं। हम अपने बाहुबल से संसार से अत्याचार दूर भगा देते हैं और फिर संसार कैसा प्रफुल्लित और आनन्दित होता है। प्रत्येक अङ्ग ईश्वर ने उच्च और पवित्र आदर्श तक पहुँचने के लिये दिये हैं। क्या कोई मनुष्य इस शरीर की विचित्र रचना और मनुष्य के पराक्रम और बुद्धि को देखकर मूर्खता, मद, लोभ, मोह में फँसकर आत्महनन कर सकता है? हे परम सुहृद! दुष्ट निराशसिंह के मिथ्या तर्क में न फंस कर, कार्यक्षेत्र में कूद पड़ो। आप आत्महनन कदापि न करें क्योंकि भगवान् ने ईशोपनिषद् में भी कहा है—

असुर्य्या नाम ते लोका, अन्धेन तमसा वृताः।
तांस्ते प्रेत्यापि गच्छन्ति, ये के चात्महनो जनाः॥

"आत्महनन करने वाले सब मनुष्य मर कर अवश्य ही उन लोकों में जाते हैं, जहां सूर्य्य कभी उदय नहीं होता और

जो सदा अंधकार से पूरित रहते हैं" उठो, इस अपवित्र स्थान को छोड़ो। देवी के इन वचनों ने सज्जनसिंह पर अमृत का काम किया। और उसने खड़े होकर श्रीमती सत्यवतीदेवी का हृदय से धन्यवाद किया और घोड़े पर सवार होकर अपने घर गया।

पाठक उस उपरोक्त सवार का नाम जानने को उत्सुक होंगे जोकि डर से भाग कर आया और जिसको बचाने के लिये सज्जनसिंह गये और स्वयं भी निराशसिंह के फेर में फंस गये। पाठक यह ज़ानकर प्रसन्न होंगे कि ये सवार हमारे चिरपरिचित धोंकलसिंह ही थे। सज्जनसिंह, धोंकलसिंह और उनके मित्र विदेश जाने की तैयारी करने लगे और "दयानन्द" नामक स्टीमर में बैठकर उन्होंने विदेश के लिये बम्बई नगर से प्रस्थान किया। जहाज को पहिली बार देखकर और वहां का प्रबन्ध निरीक्षण कर उनके हृदय में क्या २ भाव उत्पन्न हुए, यह हम पाठकों के अनुमान पर छोड़ते हैं।

विदेशों में जाकर उन्होंने विद्यार्थी जीवन किस प्रकार व्यतीत किया? उनके प्रोफेसरों ने उनके साथ किस प्रकार मित्रवत् व्यवहार किया? वहां की पवित्रता, सुन्दरता, पुरुषों के स्वास्थ्य और विचित्र २ वस्तुएं देखकर उनके हृदय में कैसी २ तरंगे उठीं? उनको विदेशों में कैसी २ कठिनाइयां उठानी पड़ीं? इन सब का उल्लेख हम विस्तारभय से यहां नहीं करते हैं।

पाठकों को स्मरण रहे कि सज्जनसिंह और सुशीलचन्द्र ने विदेश में जाकर विदेशियों की भाषा पढ़कर अपनी बुद्धि की तीव्रता से बड़ा नाम कमाया। सज्जनसिंह सदा अपनी कक्षा में पहिले नम्बर पर रहे और स्कॉल-

रशिप प्राप्त की। उच्च से उच्च डिगरियां, जो कि व्यापारिक कालेज में प्राप्त कर सक्ते थे, वे सब उन्होंने प्राप्त करलीं। उनके चारों मित्रो ने भी परीक्षा पास कर कर अपने २ निर्धारित विषयों के डिप्लोमा प्राप्त कर लिये।

सज्जनसिंह और उनके चारों मित्र विद्याध्ययन समाप्त कर पूरे तीन वर्ष पश्चात् स्वदेश को लौटने की तैयारी करने लगे और लन्दन नगर से "राणाप्रताप" नामक स्टीमर में बैठकर प्यारी जन्मभूमि की ओर प्रस्थान किया।

दशम परिच्छेद ॥

++卐+++卐++

प्रातःकाल का समय है। सूर्य्य भगवान् बादलों से निकलकर अपने प्रकाश को संसार में फैला रहे हैं। एक सुन्दर जहाज समुद्र में चल रहा है। शीतऋतु होने के कारण कड़ाके का जाड़ा पड़ रहा है। दांत से दांत कटकटा रहे हैं। माघ मास की ऋतुरानी अपने मेघों से निकलते हुए दिवाकर को छिपाने का प्रयत्न कर रहा है। वह देखो उसने फौरन ही अंशुमाली पर धावा करने के लिए श्याम बादल छोड़े हैं, जो बात की बात में अपने रूपों को दानवों के समान बढ़ा कर भयावनी डरावनी गर्जना कर रहे हैं। और अपनी कमर से नोकीली चमकीली खड्ग के समान बिजलियां चमका कर भगवान् भुवनभास्कर पर धावा कर रहे हैं। इस दृश्य को देखकर बिचारे गरीब ठंड के मारे भीगने के भय से पेड़ों के नीचे आरहे हैं। पक्षी भी अपने घोंसलों में जा बैठे हैं। परन्तु हमारे सज्जनसिंह और उनके नवयुवक मित्र जहाज के डेक पर वायु की सनसनाहट सहते हुए अपने ओवरकोटों की पाकिटों में दोनों हाथ डाले हुए बम्बई बन्दर की ओर टकटकी बांधे खड़े हैं। इन नवयुवकों के हृदय में यह प्रकृति का भयंकर दृश्य द्विगुणित उत्साह उत्पन्न कर रहा है। वे इस दृश्य से संसार में "भगवान् भुवनभास्कर के समान मेघरूपी काले भयानक पापरूपी शत्रुओं से" युद्ध करने का पाठ सीख रहे हैं। आज उनकी प्रसन्नता की कुछ सीमा नहीं है। सुशीलचन्द्र, सज्जनसिंह, धोंकलसिंह, हरनारायण, रामसिंह पांचों मित्र अपनी मातृभूमि के तीन वर्षों के पश्चात् दर्शन कर अवर्णनीय आनन्द प्राप्त कर रहे हैं। कौन ऐसा भाग्यहीन होगा जिसका हृदय अपनी मातृभूमि के

दर्शनों से हर्षित न हो ? पाठक ! स्वयं ही इन युवकों के हृदय के आनन्द का अनुमान करलें। बम्बई में उतरते ही अपने गृहों पर जा इन्होंने अपने २ व्यवसाय कर धनोपार्जन करने का चिन्तन किया, परन्तु इनकी जातिवालों ने इन्हें जाति च्युत किया। कारखाने खोलने के लिये धनिक महाजनों ने डर के मारे रुपये नहीं दिये, किन्तु ये शेर इन आपत्तियों से कब डरने वाले थे। इन्होंने बाल्यावस्था से ही आपत्तियों और दुःखों को वीरता से सहन करना सीखा था। ये लोग संसार में किसी वस्तु को भी असम्भव न मानते थे। ये रूठी सावित्री को भी मनाकर यज्ञ में उपस्थित करने की हिम्मत रखते थे। परमात्मा उनकी सहायता करता है जो स्वयं अपने पैरों आप खड़े होते हैं। इस कहावत के अनुसार अन्त में ये अपने कार्य्य में सफलीभूत हुए। तीन वर्षों में ही सज्जनसिंह ने व्यौपार में चमत्कार दिखा दिया। उन्होंने 'Export, Import यानी विदेश से माल मंगाना और यहां से माल भेजना' इस व्यौपार में लाखों रुपये कमा लिये। सुशीलचन्द्र ने अंग्रेजी दवाइयां बनाने का स्वयं कारखाना खोला और उन दवाइयों को विलायती दवाइयों से सस्ती बेचकर खूब धन संचय किया। धोंकलसिंह धोंकल ही ठहरे। अपनी प्रकृति के अनुसार विलायत जाकर भी सिर्फ किताबी विद्या ही सीखी और कार्य रूप में अपनी विद्या का उपयोग न ले सके, इसलिये इन बेचारों को १५०) रु० माहवारी की एक कालेज में नौकरी स्वीकार करनी पड़ी। हरनारायणजी ने पहिले पहिल तो धन न होने के कारण कलाकौशल की पुस्तकों का मातृभाषा में अनुवाद किया और तत्पश्चात् स्वयं कारखाने खोलकर अतुल सम्पत्ति के स्वामी बन गये।

एकादश परिच्छेद ॥

अजा देव की प्राचीन ऊजड़ नगरी के पूर्व की ओर. नाग-पर्वत के ज्येष्ठ पुत्र और अर्वली के पौत्र, गढ़बीटली, वर्त्तमान में तारागढ़ नामधारी, गिरारी, एक अटल व्रतधारी महान् बली योधा की नाईं, प्रकृतिप्रदत्त अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित, कमर बांधे अचलरूप से घाटी के आगे पैर अड़ाये डटा है। और निज आकृति से यह पुकार २ कर कह रहा है कि यद्यपि मैंने सहस्रों संग्राम देखे हैं और लाखों योद्धाओं के मुँह मोड़े हैं और अब एक शताब्दी से मेरे सन्मुख कोई नहीं आता है, परन्तु मैंने जो प्रतिज्ञा अपने मालिक के सन्मुख करली है, उसे अन्त तक निभाऊंगा और पीछे पैर कभी नहीं हटाऊंगा। चाहे लोग मेरे केश काट २ के लेजायँ या मांस नोच २ के खाजायें, परन्तु मोर्चे को छोड़ना मेरा धर्म नहीं। ऐसे योद्धा के सन्मुख वाले मीलों लम्बे चौड़े मैदान में, जिसमें गिरिराज के स्नान से बचा हुआ जल बह रहा है, जिसे इन्द्र के मेघदूतों ने बड़ी श्रद्धा व चाव से अपने सहस्रधारा वाले फव्वारों द्वारा पर्वतराज पर लुढ़ाया था और जिसने कोमल होते हुए भी वीर के अंग के संसर्ग से ही वह घोररूप धारण किया कि जो उसके सन्मुख आया उसे पछाड़ बहाया। और जिसने ज़रा दम ख़म दिखाया उसे खोद गिराया। यहांतक कि पथरीले मैदान में, गहरे २ गारों व ऊंचे नलों के ऊंचे २ किनारे उसकी विजय की आज तक गवाही दे रहे हैं।

उपरोक्त मैदान में, जिसने न मालूम कितने अभिमानी छत्रधारियों के मान का मर्दन कर उनके भाग्य का अन्तिम फैसला किया और न मालूम कितने वंशों को सिंहासनच्युत कर नवीन को उन पर बिठाया, आज कातिक महीने के शुक्लपक्ष की प्रथमा को, इसके पहिले कि भगवान् भुवनभास्कर अमावस्या की काली रात्रि के तिमिर को छिन्न भिन्न करके अपने सप्तरंगी किरीट की लालिमा की झलक को अपनी किरणों द्वारा दिखावें आर्य्यकुमार खुशी का बैंड बजाते हुए जारहे हैं और तगागढ़ पर्वत पर चढ़ रहे हैं। उनके पीछे २ आर्यकुमारों की पल्टनें की पल्टनें ओ३म् का झंडा लहराती हुई कन्धों पर छोटी २ बन्दूकें रक्खे हुए जारही हैं। उनकी मार्च एक सुसज्जित जर्मन पल्टन को भी मात कर रही है। इन नवयुवकों के ब्रह्मचर्ययुक्त सुन्दर सुडौल शरीर अच्छे २ पल्टनिये जवानों को भी लज्जित कर रहे हैं।

आज दीपमालिका का दूसरा दिवस है। गोपालबाल, ढाल तलवार बांधे मोरपंखों से अपने २ शिर सजाये अपनी २ प्यारी दुधारी गायों व भैंसों के सींग व अंगों को भांति २ के रंगों से रंग कर इसी मैदान में खिलाने लाया करते हैं, जिसे वे "खींखरे चढ़ाना" पुकारते हैं अर्थात् एक बांस के सिरे पर घृत के चर्मपात्र (सीधड़ी) को बांध, उसमें कंकर डाल गौओं के सन्मुख हिलाते हैं, जिसके शब्दों से भिड़क कर गाय, बैलों के समूह के समूह, ऊंची पूंछ व नीचे सींग कर, बेतरह मैदान में भागती हैं और ग्वालबाल खूब खींखरे को बजा २ कर उनको उत्तेजना देते हैं, यहांतक कि कोई दिलचली गाय ग्वाल के पीछे पड़ जाती है और वह भाग

-कर नगर का मार्ग पकड़ता है और जिस किसी की वह गाय होती है उससे मिठाई व पगड़ी पाता है। परन्तु आज यह उत्सव भी तारागढ़ पर ही मनाया जावेगा और वहां पारितोषिक वितीर्ण होगा। इसका कारण यह है कि गौओं की पुकार सुनकर उन पर करुणा करने वाले गायों के दुःख निवारणार्थ गोशाला खोलने वाले सज्जनसिंह का आज श्रीमती सत्यव्रती देवी से तारागढ़ पर विवाह होगा। विवाह के लिये यह स्थान इसलिये चुना गया, क्योंकि सज्जन भी इसी पर्वत के समान वीर हैं और उन्होंने यहां पर ही अपना नया भवन बनाया है। सज्जनसिंह ने देश के हितार्थ बड़े २ कारखाने ऋषि के नाम पर स्थापित किये हैं। इन्हीं से हज़ारों अकाल-पीड़ित बेरोज़गार परिवारों की रोटियां चलती हैं। आज इन विशाल कारखानों की गगनचुम्बी चिमनियों पर अशोक चक्राङ्कित तिरंगा राष्ट्रीय झण्डा व ओ३म् के झंडे बंधे हुए दूर २ के ग्रामों और नगरों के मनुष्यों को विवाह के हर्ष की सूचना देरहे हैं और वायु के वेग से हिल २ कर उनको आदर्श-विवाह में सम्मिलित होने को निमंत्रित कर रहे हैं। देशहित का कोई ऐसा कार्य्य नहीं जिसमें सज्जनसिंह का हाथ न हो। प्रत्येक नगर निवासी उन पर मुग्ध है। उनकी प्रशंसा सब के मुख में बस रही है। उनका ऋषि मुनियों के समान जीवन, ईश्वर में पूर्ण विश्वास, आशा, संतोष, दया, धर्म, धृति, पुण्य, ध्यान और ब्रह्मचर्य्य की सब प्रशंसा करते थे। आबालवृद्ध सब ही उनकी इस खुशी में सम्मिलित होने को उत्सुक हैं। इसीलिए आज प्रातःकाल से ही नगरनिवासी अपने कारोबार छोड़ कर अपनी समाज के शिरोमणि देशभक्त सज्जनसिंह के विवाह-संस्कार में सम्मिलित

होने को जारहे हैं। "विवाह-संस्कार वैदिक रीति से सांयकाल के ५॥ बजे होगा"। यही चर्चा सब के मुंह पर है। नगर भर के छात्रों को आज मोदक मिलेंगे, इसलिये सब स्कूलों की छुट्टियां हैं और सब ही छात्र अपनी स्कूलों के साफे बांधे हुए चार चार की पल्टन बना कर चले जारहे हैं। अहा ! तारागढ़ पर्वत आज कैसा सुन्दर प्रतीत होता है। आज तारागढ़ पर बने हुए कुंडों और तालाबों की अपूर्व शोभा है। कुंडों के चारों ओर सुन्दर लाल २ सड़कें भली मालूम होती हैं। माली ने सड़क के किनारे की क्यारियों को बहुत ही सुन्दरता से काटी हैं। क्यारियों में तरह २ के फूल खिल रहे हैं, सड़कों के दोनों ओर रेलिया लगा हुआ है। इस रेलिये और मेंहदी में माली ने बड़ी ही कारिगरी से प्रत्येक मोड़ पर रेलिये को ही काटकर कहीं कुर्सी, कहीं सिंह, कहीं हिरन कहीं घोड़ा, कहीं सूअर, अति सुन्दर बनाये हैं। किसी किसी कुण्ड में फव्वारे छूट रहे हैं। कुण्डों के आस पास के ऊँचे २ सर्व के वृक्ष और सुन्दरता फुलवारी युक्त घमले मानों छूटते हुए फव्वारों के आनन्द को लूट रहे हैं। आज तारागढ़ के तालाबों की कुमोदिनी व कमलों की दशा भी जगी है। जिस कुमोदिनी* को महाराज पृथवीराज के पश्चात् किसी क्षत्रिय ने आनन्द से नहीं निहारा था, आज उस कुमोदनी ने भी सज्जनसिंह चौहान के विवाह समाचारों से आनन्दित हो अपनी वियोगवेदना को भूल अपने उलटे पत्रों को सुलट, स्नान कर रूठी रानी के स्वांग को त्याग मोतियों से मांग भरली है। आज सज्जनसिंह के दर्शनों से आनन्दित हुई कुमोदिनी ऐसी

---

* तारागढ़ के कुण्डों में कुमोदिनी है। और उस पर गिरे हुए जल के विन्दु उपरोक्त प्राकृतिक दृश्य को सत्य साबित करते हैं।

प्रतीत होती है। मानो वह पूर्णचन्द की पूर्णकला से आनन्दित हो अपने प्रीतम के उज्ज्वल हँसमुख की झांकी, बांकी चितवन से झील के दर्पण में कर फूली नहीं समाती है। और दर्शकों को सच्चे प्रेमपथ का दर्श दिखा यह दोहा:—

"जल में बसे कुमोदिनी, चन्द्र बसे आकाश।
जो जाहू के मन बसे, वो वाहू के पास॥"

गवा रही है। स्वयंसेवकों ने यज्ञमण्डप बहुत ही सुन्दरता से सजाया है। वेदमन्त्रों को स्वयंसेवकों ने बड़ी ही कारीगरी से तैयार कर २ सभामण्डप में लटकाये हैं। भारत के सब महापुरुषों के चित्र यज्ञमण्डप को सुशोभित कर रहे हैं। कालीन और ग़ालीचों पर सहस्रों नर नारी प्रसन्नमुख बैठे हैं। आज श्रीमान् राष्ट्रपति महोदय भी विवाहसंस्कार में सम्मिलित हुए और उच्चासन पर बैठे भले प्रतीत होते हैं।

सज्जनसिंहजी २८ वर्ष के सुन्दर सुडौल कसरतिये जवान अपने कपड़ों से लेस आज साक्षात् रामचन्द्रजी के समान दृष्टिगोचर हो रहे हैं। और सत्यवती देवी भी पूर्ण २० वर्ष की युवती सब बातों में अपने वर के अनुरूप साक्षात् जनकदुलारी सीता दृष्टिगोचर होरही है। पण्डित महानुभाव वेदमन्त्रों का उच्चारण कर रहे हैं! कस्तूरीयुक्त घृत, अगर, तगर, चन्दन, कपूर के हवन में जलने से सर्व दिशाओं में सुगन्धि फैल रही है। बैंड बाजे देशभक्ति के मधुर भजन गारहे हैं। प्रत्येक के मुख पर मुस्कान है। गोपाल, गाय और बैलों के झुन्ड के झुन्ड लिये हुए "खींखरे चढ़ाने" के खेल से थके हुए, पारितोषिक ले रहे हैं। स्कूलों के अध्यापक छात्रों को मोदक बांट रहे हैं।

सज्जनसिंह प्रत्येक दर्शक के गले में पुष्पमाला पहिना उनके आशीर्वाद ले रहे हैं। हरनारायण और सुशीलचन्द्र दर्शक गणों का पान और इलायची से आदर सत्कार कर रहे हैं। चारों ओर आनन्द ही आनन्द की सीमा बह रही है। ७ बजे तक यह संस्कार अति आनन्द से समाप्त हुआ और सर्व दर्शकगण और नगर निवासी वर वधुओं की कीर्ति का गान करते हुए अपने घरों को लौटने लगे। और सबही के मन में इस आदर्शविवाह से यह भाव उत्पन्न हुआ कि वे भी अपने पुत्र पुत्रियों को सज्जन और सत्यवती के समान विद्याध्ययन करावें और बालविवाह को हटाकर सत्य सनातन वैदिकधर्म की मर्यादानुसार विवाह करें। सहस्त्रों नरनारी परमात्मा से प्रार्थना करते जारहे थे कि उन-के भी सज्जनसिंह के समान धार्मिक स्वतंत्रता प्राप्त करने वाले पुत्र हों। सब ही "वैदिकधर्म की जय" और "जो दृढ़ राखे धर्म का तेहि राखे कर्त्तार" की उच्च स्वर से घोषणा करते हुए अपने २ घरों को लौटे।

आर्यसमाज के प्रमुख नेता व हैद्राबाद सत्याग्रह के प्रमुख सेनानी श्री शारदाजी
इस चित्र में साफा बांधे आर्य नेताओं के साथ खड़े हैं

श्री धुरेन्द्रजी शास्त्री, श्री खुशहालचन्द्जी (आनन्द स्वामी सरस्वती), श्री स्वर्गवासी नारायण स्वामीजी,
श्री घनश्यामसिंहजी गुप्त, श्री ताराचन्दजी गाजरा ।

हिन्दू महासभा के प्रमुख नेता श्री देशभक्त कुंवर चांदकरणजी शारदा के सहयोगी
इस चित्र में शारदाजी के साथ खड़े हैं
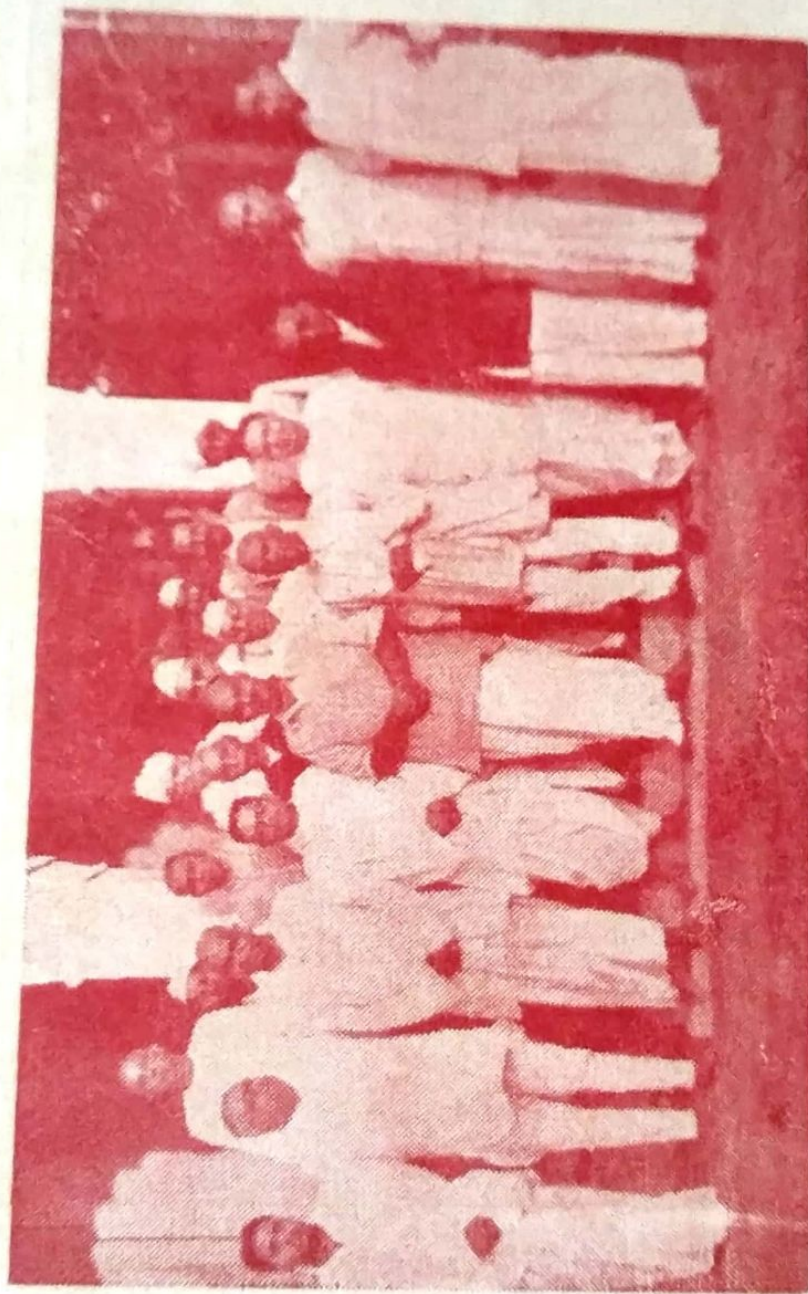
सर्व श्री देश पांडेजी, हरिश्चन्द्रजी, भाईजी, एन० सी० चटर्जी, खापर्डेजी, डा० श्यामाप्रसादजी मुकर्जी,
डा० गोकुलचन्द्रजी नारंग, भोपटकरजी, आशुतोषजी लहरी, कैप्टिन केशवचन्द्रजी।